अषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 243 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 28 अगस्त 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

स्थायी सुख, शान्ति व निर्भय वातावरण के लिए ''क्रियायोग अभ्यास करें'' सत्य की अनुभूति में सभी प्रकार के क्लेश हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग के द्वारा हम सत्य से जुड़ जाते हैं। ज्ञान, शक्ति, शान्ति, आनन्द, नाम-यश, धन आदि के लिए मनुष्य को दर-दर भटकना पड़ता है, और प्राप्त न होने पर मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति प्रकट होती है। क्रियायोग में भक्ति दृढ़ होने पर ज्ञान, शक्ति, शान्ति,आनन्द, धन आदि सब कुछ स्वयं मनुष्य के पास आ जाते हैं।

क्रियायोग प्राचीनतम् एवं नित्य नवीन पूर्ण विज्ञान है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार कलिकाल में क्रियायोग का ज्ञान विलुप्त हो गया। आरोही द्वापर युग के आते ही मृत्युंजय अमर गुरु श्री महावतार बाबा जी द्वारा क्रियायोग को पुनर्जीवित कर पुनः परिष्कृत किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में महावतार बाबाजी ने क्रियायोग को लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम से मानवजाति को दिया। क्रियायोग ही सनातन धर्म में वर्णित यज्ञ है। क्रियायोग ही वेदपाठ है। क्रियायोग अभ्यास से मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप ''अहंब्रह्मास्मि'' की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान

प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

कोरोना के खिलाफ जंग में बड़ी कामयाबी

देश में एक दिन में 1 करोड़ से ज्यादा लोगों को लगा टीका

नई दिल्ली (एजेंसी)। देर से ही सही देश ने कोरोना के खिलाफ जंग में वह रफ्तार हासिल कर ली है, जो महामारी को खत्म करने और सभी को जल्दी सुरक्षित कर लेने के लिए जरूरी है। देश में शुक्रवार को रिकॉर्ड 1 करोड़ से अधिक लोगों को कोरोना वैक्सीन लगाई गई। स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने ट्वीट करके यह जानकारी दी तो पीएम मोदी ने भी इस सफलता पर खुशी जाहिर की है। इससे पहले 17 अगस्त को देश में टीकों की 88 लाख से अधिक खुराकें दी गईं थीं। स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने इस उपलब्धि का ऐलान करते हुए ट्वीट किया, ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास। यह वही प्रयास है जिससे देश ने 1 दिन

में 1 करोड़ से अधिक टीके लगाने का आंकड़ा पार कर लिया है। स्वास्थ्यकर्मियों का अथक परिश्रम और पीएम मोदी जी का 'सबको वैक्सीन मुफ्त वैक्सीन' का दृढ़ संकल्प रंग ला रहा है।'' पीएम नरेंद्र मोदी ने इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए कहा, ''आज रिकॉर्ड टीकाकरण! 1 करोड़ को पार करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। टीका लेने वालों और मुहिम को सफल बनाने वालों को बधाई।स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार को कुल 1 करोड़ 64 हजार 32 लोगों को कोरोना का टीका लगाया गया। इसके साथ ही देश में अब तक कुल टीके की 62,17,06,882 खुराक दी जा चुकी है। 48,08,78,410 लोगों को टीके की एक खुराक दी गई है तो 14,08,28,472 दोनों टीके ले चुके हैं।

कवि कुमार विश्वास समेत दो लोगों के खिलाफ वारंट जारी, सात साल पहले उपद्रव और सड़क जाम करने पर दर्ज हुआ था केस

सुलतानपुर (एजेंसी)। यूपी के सुलतानपुर जिले के गौरीगंज कस्बे में सात साल पूर्व सड़क जाम, उपद्रव और आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन समेत अन्य आरोपों में फरार पूर्व लोकसभा प्रत्याशी और कवि कुमार विश्वास तथा सहयोगी अजय सिंह के खिलाफ एमपी/एमएलए की विशेष कोर्ट ने वारंट जारी किया है। 20 अप्रैल 2014 को लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान हुए बवाल में अमेठी के अपर मुख्य अधिकारी जगप्रसाद मौर्य की तहरीर पर दर्ज मुकदमे में आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष और दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल, कवि कुमार विश्वास हरिकृष्ण, बब्लू तिवारी और अजय सिंह समेत कई लोगों पर चार्जशीट दाखिल हुई थी। मामले में अरविंद केजरीवाल की हाजिरी पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा रखी है। कुमार विश्वास और अजय सिंह के कोर्ट में हाजिर न होने के कारण न्यायाधीश पीके जयंत ने जमानती वारंट जारी किया है।

नौ सितंबर तक जेल भेजे गए पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर

लखनऊ (एजेंसी)। दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट के बाहर रेप पीड़िता के आत्मदाह करने के मामले में हजरतगंज पुलिस ने शुक्रवार को पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें गोमतीनगर आवास से जीप पर बैठाकर हजरतगंज कोतवाली लाया गया। उनके व बसपा सांसद अतुल राय के खिलाफ शुक्रवार को ही एसएसआई दयाशंकर द्विवेदी की तहरीर पर आत्महत्या के लिये उकसाने के आरोप में एफआईआर दर्ज की गई थी। एफआईआर एसआईटी की जांच कमेटी की रिपोर्ट पर की गई। रिपोर्ट में बसपा सांसद अतुल राय और अमिताभ ठाकुर को दोषी पाया गया है। बसपा सांसद रेप के इसी मामले में दो साल से नैनी जेल में बंद हैं। अमिताभ को पुलिस की कड़ी सुरक्षा में देर शाम अदालत में पेश किया गया, जहां प्रभारी सीजेएम सत्यबीर सिंह ने उन्हें नौ सितंबर तक के लिए न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

सांसद अतुल राय पर वर्ष 2019 में यूपी कॉलेज की पूर्व छात्रा ने दुराचार का मुकदमा लंका थाने में दर्ज कराया था। मुकदमे के बाद सांसद ने रेप पीड़िता के खिलाफ भी कई मुकदमे दर्ज कराये। रेप पीड़िता और उसके मामले में गवाह सत्यम ने सुप्रीम कोर्ट के बाहर आत्मदाह कर लिया था। 21 मई को गवाह सत्यम राय और 25 मई को दुष्कर्म पीड़िता की मौत हो गई। इसका वीडियो भी वायरल हुआ था जिसमें पीड़िता ने अतुल राय पर कई आरोप लगाये थे। साथ ही अमिताभ ठाकुर पर सांसद का सहयोग करने के लिये झूठे साक्ष्य तैयार करने का आरोप भी लगाया था। इसके बाद ही शासन ने एसआईटी गठित कर दी थी। इसमें पुलिस भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष एवं डीजीपी ईओडब्ल्यू डॉ. आरके विश्वकर्मा तथा एडीजी महिला एवं बाल सुरक्षा संगठन नीरा रावत हैं। इस समिति ने कुछ दिन पहले ही अमिताभ ठाकुर व तत्कालीन वाराणसी एसएसपी अमित पाठक, निलम्बित सीओ अमरेश सिंह बघेल के बयान भी दर्ज किये थे। एसआईटी ने अपनी रिपोर्ट में अमिताभ ठाकुर व अतुल राय को दोषी बताया और कई बिन्दुओं पर यह रिपोर्ट शुक्रवार को हजरतगंज पुलिस को भेजी। रिपोर्ट में एफआईआर किये जाने की संस्तुति थी जिस पर हजरतगंज कोतवाली में मुकदमा दर्ज कर लिया गया।

कल्याण सिंह को श्रद्धांजलि देने की तैयारी, 31 अगस्त को 1918 मंडलों में शोक सभा का आयोजन करेगी भाजपा

लखनऊ (एजेंसी)। प्रदेश भाजपा 31 अगस्त को राज्य में पार्टी के 1918 मंडलों में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर स्व. कल्याण सिंह को श्रद्धांजलि देगी। प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने बताया है कि इस दिन राजधानी लखनऊ में भी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया जाएगा। स्वतंत्र देव सिंह ने कहा है कि स्व. कल्याण सिंह गांव, गरीब व किसानों के नेता थे। बाबूजी सदैव पं. दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रशस्त अन्त्योदय पथ के अनुगामी रहे। वह जन नेता थे। उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ ही विभिन्न संगठनात्मक दायित्वों व सार्वजनिक जीवन में गांव, गरीब, किसान, दलित, पिछड़ों सहित सभी वर्गों के लिए काम किया और उनसे सदैव जुड़े भी रहे। पार्टी के कार्यकर्ता, नेता, पदाधिकारियों के साथ ही आम जनमानस भी बाबूजी के निधन जाने से दुःखी है। उन्होंने बताया है कि श्रद्धांजलि सभा कार्यक्रम में पार्टी के पदाधिकारी, नेता, जनप्रतिनिधि, मंत्री, कार्यकर्ता के साथ ही आम जनमानस की सहभागिता भी होगी।

डैमेज कंट्रोल मोड में शिवसेना? बताया बीजेपी संग हिंदुत्व वाला रिश्ता, पाक घुसपैठियों से राणे की तुलना

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के नेता और केंद्रीय मंत्री नारायण राणे को गिरफ्तार करवाकर केंद्र की सत्ताधारी पार्टी को नाराज करने के बाद शिवसेना अब डैमेज कंट्रोल मोड में दिख रही है। शिवसेना नेता संजय राउत ने शुक्रवार को बीजेपी के संग हिदुत्व वाले रिश्ते की दुहाई दी और इसे खराब करने का ठीकरा नारायण जैसे नेताओं पर फोड़ा जो बीजेपी में नए हैं। राउत ने यह भी कहा कि देवेंद्र फडणवीस और चंद्रकांत पाटिल जैसे बीजेपी नेताओं ने कभी अभद्र भाषा का इस्तेमाल नहीं किया और दोनों पार्टियों का 25 साल तक साथ रहा।

मोदी कैबिनेट में शामिल किए जाने के बाद महाराष्ट्र में जनआशीर्वाद यात्रा निकाल रहे नारायण राणे ने उद्धव ठाकरे को थप्पड़ मारने की बात कहकर विवाद खड़ा कर दिया था। उन्होंने कहा था कि स्वतंत्रता दिवस के दिन उद्धव ठाकरे यह भूल गए कि आजादी को कितने साल हुए। उन्होंने पीछे सेक्रेटरी से पूछा कि यह अमृत महोत्व है या हीरक महोत्सव। यदि मैं वहां होता तो उद्धव को थप्पड़

लगा देता। राणे के बयान पर शिवसेना आक्रोशित हो गई। जगह-जगह विरोध प्रदर्शन होने लगे। पुलिस से शिकायत की गई और मंगलवार को राणे को गिरफ्तार कर लिया गया।

राउत ने कहा, ''बीजेपी और शिवसेना में कुछ मुद्दों पर वैचारिक मतभेद था, लेकिन रिश्ता कभी कड़वा नहीं हुआ। पिछले कुछ सालों में बीजेपी जॉइन करने वाले नेताओं ने यह रिश्ता खराब कर दिया। उनकी कुख्याति बांग्लादेशी और पाकिस्तानी घुसपैठियों की तरह है जो हमारे सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ते हैं।'' राउत ने आगे कहा, ''हमने (बीजेपी और शिवसेना) कभी एक-दूसरे पर इस तरह हमला नहीं किया ना ही रिश्ता कड़वा रहा। जिस तरह राणे व्यवहार कर रहे हैं, वह दुश्मनी दिखा रहे हैं। किस तरह के व्यक्ति को बीजेपी ने हमारे रिश्ते को सुधारने के लिए नियुक्त किया है। राउत ने कहा कि शिवसेना बीजेपी के साथ 25 साल तक रही और सेना संस्थापक बालासाहेब ठाकरे और अटल बिहारी वाजपेयी व एलवेे आडवाणी के रिश्ते मैत्रीपूर्ण थे। राज्यसभा सांसद ने कहा, ''पीएम मोदी और मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के बीच भी रिश्ता सौहार्दपूर्ण है।

काबुल में हो सकता है एक और आतंकी हमला, अमेरिका की चेतावनी, बचाव अभियान को है बड़ा खतरा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। काबुल में एक और आतंकी हमला हो सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के राष्ट्रीय सुरक्षा दल ने इस बारे में उन्हें सूचना दी है। इस सूचना में अमेरिकी प्रेसीडेंट को बताया गया है कि काबुल में एक और आतंकी हमला होने की आशंका है। साथ ही यह भी बताया गया है कि अफगानिस्तान की राजधानी में एयरपोर्ट पर सिक्योरिटी और बढ़ाई जा रही है। व्हाइट हाउस की प्रवक्ता जेन साकी ने बाइडन की टीम द्वारा राष्ट्रपति को दी गई जानकारी के बारे में जेन साकी ने बताया कि कमांडर्स ने प्रेसीडेंट को यह भी जानकारी दी है कि इस्लामिक स्टेट-खोरासन से निपटने के लिए क्या योजनाएं बनाई जा रही हैं। इसके मुताबिक कमांडर्स ने राष्ट्रपति को बताया कि अफगानों को वहां से निकालने के मिशन के आने वाले दिन बहुत चुनौतीपूर्ण होंगे। वहीं बाइडेन ने भी अमेरिकी सैन्य कमांडर्स से कहा है कि काबुल में अपनी सेना को बचाने और ऑपरेशन के लिए जितने भी अप्रूवल चाहिए सब मिलेंगे। इसको बेहतर ढंग से अंजाम देने के लिए उन्हें सारे संसाधन भी मुहैया कराए जाएंगे। गौरतलब है कि इससे एक दिन पहले काबुल हवाई अड्डे के पास हुए हमलों में अमेरिका के 13 सैनिक मारे गए थे।इस बीच अफगान लोगों को निकालने के लिए काबुल से उड़ानें शुक्रवार को फिर से शुरू हो गईं। अमेरिका का कहना है कि देश के सबसे लंबे युद्ध को समाप्त करने के लिए विदेशी सैनिकों की वापसी की मंगलवार की समय सीमा से पहले और हमले होने की आशंका है। पहचान जाहिर नहीं करने का अनुरोध करते हुए दो अधिकारियों ने कहा कि धमाकों में 169 लोग मारे गए। कई शवों की पहचान नहीं हो पायी है या क्षत विक्षत शवों के कारण अंतिम संख्या के बारे में समय लग सकता है। काबुल से प्रस्थान करने वाले विमानों की आवाज़ और गूंजती प्रार्थना के बीच, हवाई अड्डे के बाहर व्याकुल भीड़ देश से निकलने का इंतजार कर रही है।

गोरखपुर में बच्चों और युवाओं की भीड़ देखकर रुके सीएम योगी, बोले-विश्वविद्यालय बन रहा है, पढ़ने आओगे न!

गोरखपुर (एजेंसी)। महायोगी गुरु गोरक्षनाथ आयुष विश्वविद्यालय का निरीक्षण कर सीएम योगी आदित्यनाथ हेलीपैड के लिए अपनी फ्लीट में बैठने जा रहे थे कि बच्चों और युवाओं की भीड़ देख कर ठिठक गए। चेहरे पर मुस्कुराहट लिए निकट पहुंचे तो बच्चों की खुशी देखते ही बन रही थी। सीएम ने सभी से पूछा, ठीक हो? योगी के रूबरू होने से बच्चों का हौसला बढ़ा तो मोबाइल निकाल कर तस्वीरें लेने लगे। मुस्कुराते हुए योगी ने युवाओं से कहा कि अब यहां विश्वविद्यालय बन रहा है, पढ़ने आओगे न! सबने जोर से हां में जवाब दिया। सीएम के अभिवादन में जोरदार तालियां भी बजाईं।

बालसुलभ मुस्कराहट और शोर के साथ उन्होंने सीएम का अभिनंदन किया। यह देख योगी भी थोड़े हंसी-मजाक के मूड में आ गए। उन्होंने ?साथ खड़े सदर सांसद अभिनेता रविकिशन शुक्ल की तरफ इशारा किया। योगी ने पूछा कि इन्हें पहचानते हो? बच्चों ने उल्लास के साथ जवाब दिया, सांसद रवि किशन जी हैं। इस पर सीएम ने हंसते हुए कहा कि ये फिल्मस्टार भी हैं, इनके साथ फिल्मों में काम करोगे। सीएम के यह कहते ही बच्चों के साथ साथ खड़े सांसद, विधायक और सुरक्षा में लगे अधिकारी भी हंस पड़े। खुद योगी भी खिलखिला कर हंस पड़े।

नापाक गठजोड़: जैश सरगना मसूद अजहर ने की तालिबानी नेता बरादर से मुलाकात, कश्मीर पर मांगी मदद

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तानी आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के सरगना मौलाना मसूद अजहर ने अफगानिस्तान के कांधार जाकर तालिबानी नेतृत्व से मुलाकात की है। भारत में कई आतंकी हमलों के लिए जिम्मेदार मसूद ने कश्मीर में अपने नापाक मंसूबों को अंजाम देने के लिए तालिबान से मदद मांगी है। सूत्रों ने यह जानकारी दी है। सूत्रों के हवाले से बताया है कि मसूद अजहर ने तालिबान के पॉलिटिकल विंग के प्रमुख मौलाना अब्दुल गनी बरादर से मुलाकात की है। मसूद अजहर ने कश्मीर घाटी में जैश-ए-मोहम्मद की गतिविधियों को अंजाम देने के लिए तालिबान से मदद मांगी है। हाल ही में मसूद अजहर ने अफगानिस्तान में तालिबान के के कब्जे को लेकर खुशी जाहिर की थी। 16 अगस्त को 'मंजिल की तरफ' शीर्षक से एक नोट में मसूद ने अफगानिस्तान

में मुजाहिद्दीन की सफलता की तारीफ की थी।पाकिस्तान के बहावलपुर में स्थित जैश के हेडक्वॉर्टर में जैश के आतंकियों के बीच मैसेज सर्कुलेट किया गया। जैश ने तालिबान को अफगानिस्तान में जीत की बधाई दी है। तालिबान और जैश-ए-मोहम्मद की विचारधारा शरिया लॉ को लेकर एक जैसी है। 1999 में जेल से बाहर आने के बाद जैश का गठन करने वाला मसूद अजहर भारत में कई आतंकी हमलों को अंजाम दे चुका है। असल में भारत को निशाना बनाने वाले पाकिस्तानी आतंकी संगठनों और तालिबान के बीच की यह गठजोड़ ही इमरान खान की खुशी का खुला राज है। पाकिस्तान को उम्मीद है कि तालिबानराज में वह बेरोकटोक यहां आतंकी कैंप चला पाएगा। अफगानिस्तान सरकार को उखाड़ने में तालिबान की मदद के बदले वह भारत के खिलाफ कट्टरपंथी संगठन से सहयोग चाहता है।

खबर संक्षेप

ससुराल आए युवक की संदिग्ध अवस्था में फांसी के फंदे से लटकता मिला शव

प्रयागराज। मऊआइमा थाना क्षेत्र के शहबाजपुर गांव में शुक्रवार को ससुराल आए एक युवक का शव संदिग्ध हाल में फांसी के फंदे से लटका मिला। यह देख परिजन सन्न रह गए। सूचना पाकर मौके पर पुलिस पहुंच गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना के कारणों का पता लगाने के लिए परिजनों और ग्रामीणों से पूछताछ की जा रही है। शहबाजपुर गांव में एक युवक अपनी ससुराल आया था। रात में खाना पीने के बाद परिजन सोने के लिए चले गए। युवक भी अपने कमरे में सोया था। सुबह उसकी लाश फांसी के फंदे पर लटकती देख परिजन हतप्रभ रह गए। कुछ देर में ग्रामीणों की भारी भीड़ जुट गई। घटन को लेकर सभी स्तब्ध दिखे। जानकारी मिलने पर पहुंची पुलिस ने शव को ग्रामीणों की मदद से नीचे उतरवाया और पंचनामा के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिय। युवक ने क्यों यह कदम उठाया इसको लेकर सवाल पैदा हो गया है। घटना से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया है।

बिना मुनादी कराये ही करा दी गयी बैठक : आक्रोष

लालापुर। क्षेत्र के लौंदखुर्द गांव में बिना मुनादी कराये ही सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान के चयन की बैठक करा दी गयी।ग्रामीणों ने विरोध किया तो बैठक में पहुंचे कर्मचारी नहीं माने और बैठक करा दिया का आरोप ग्रामीणों द्वारा उपजिलाधिकारी बारा को दिये शिकायती पत्र में लगाया है।शंकरगढ़ ब्लाक के लौंदखुर्द गांव के दर्जनों ग्रामीण गुरुवार को उपजिलाधिकारी बारा को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया की गांव में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान निरस्त चल रही थी।जिसमें नये चयन की प्रक्रिया होनी थी।गुरुवार को बिना ग्रामीणों को सूचना दिये ही ग्राम प्रधान द्वारा तहसील व ब्लाक कर्मियों की मिलीभगत से बिना ग्रामीणों को सूचना दिये ही बैठक का कोरम पूरा कर दिया गया।ग्रामीणों ने विरोध किया तो कर्मचारी नहीं माने।जिसको लेकर ग्राम पंचायत सदस्य राजकुमार सिंह, दिनेश सिंह, उर्मिला सिंह व ग्रामीण शुभम सिंह, नीरज, सरिता, रीनू, मीरा देवी, पूजा सिंह, राजेंद्र कुमार, छोटकऊ खां, हर्ष नारायण, मनबोध ने उप जिलाधिकारी बारा को शिकायती पत्र देकर पुनः बैठक कराने की मांग किया।

मेगा वैक्सीनेशन: टीका लगवाने को जनपद में कई स्थानों पर उमड़ी भीड़

कई स्थानों पर टूटा कोविड प्रोटोकाल, भीषण गर्मी में डटे रहे लोग

शंकर गढ़ में बने 15 सेंटरों पर हुआ वैक्सीनेशन एक सेंटर पर लाइन में लगे लोग

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। जनपद के दूसरे मेगा वैक्सीनेशन ड्राइव में भी लोगों ने भारी संख्या में टीका लगवाया। शुक्रवार को चलाए गए वैक्सीनेशन अभियान के दौरान 88 हजार लोगों को टीका लगाने का लक्ष्य रखा गया था, पर भीड़ को देखते हुए यह आंकड़ा भी पार हो जाएगा। शुक्रवार को जनपद के 315 स्थानों पर टीका लगाया गया। भीषण गर्मी के बीच धक्का-मुक्की के बीच दिनभर वैक्सीन लगाने का अभियान चलता रहा। जनपद में अब तक 16.32 लाख लोगों को टीका लगाया जा चुका है।

शुक्रवार को शहर के विभिन्न अस्पतालों के साथ ही अन्य स्थानों पर आयोजित कैंप में लोग सुबह से ही जुटने लगे थे। यही स्थिति ग्रामीण क्षेत्र में भी देखने को मिली। सीएचसी शंकरगढ़ के अधीक्षक डॉ शैलेंद्र सिंह ने बताया कि शंकरगढ़ क्षेत्र में बनाए गए 15 सेंटरों पर करीब 4000 लोगों को वैक्सीन लगाई गई। सीएचसी अधीक्षक ने बताया कि उनके क्षेत्र में कुल 15 टीकाकरण केंद्र बनवाए गए थे, जिसमें सुबह से ही वैक्सीनेशन के लिए लोगों की कतार लगी रही। यहां बड़े पैमाने पर लोगों ने टीका लगवाया। अधीक्षक ने बताया कि उन्हे 3500 लोगों को टीका लगाने का लक्ष्य मिला था, जबकि सेंटरों पर भीड़ इससे कहीं ज्यादा थी। समाचार प्रेषण तक वैक्सीनेशन का कार्य अनवरत चल रहा था।मेगा वैक्सीनेशन ड्राइव में स्वास्थ्य विभाग के साथ स्थानीय लोगों ने भी बढ़-चढकर सहभागिता की। वैक्सीनेशन की यह स्थिति यमुनापार के सभी टीकाकरण केंद्रों की रही। हालांकि इस दौरान कई केंद्रों पर भारी अव्यवस्था देखने को मिली। बिना मास्क के लोग टीका लगवाने को बेताब दिखे।

टीकाकरण के दौरान उमड़ी भीड़, उपद्रवियों द्वारा तोड़ी गयी वैक्सीन, पहुंची पुलिस

टीकाकरण के दौरान उमड़ी भीड़ व उपद्रवियों द्वारा की गई कार्रवाई पर तैनात पुलिस बल

उतरांव। उतरांव के महटीकर, बलीपुर पूर्व माध्यमिक विद्यालय पर कोरोना वैक्सिनेशन के दौरान लोगो की उमड़ी भीड़,उपद्रवी द्वारा तोड़ी गयी बैक्सीन सूचना पर पुलिस पहुची। शुक्रवार को पूर्व माध्यमिक विद्यालय महटीकर, बलीपुर में कोरोना वैक्सिनेशन का कार्य स्वास्थ्य विभाग सैदाबाद द्वारा कराया जा रहा था। सुबह से ही लोगो की भारी भीड़ उमड़ पड़ी महिला,पुरुष सभी अपनी अपनी लाइन में खड़े हुए, पंजीकरण में देरी को लेकर भीड़ बेकाबू हो गयी। कुछ अराजकतत्वों द्वारा कमरे में पहुचकर स्वास्थ्यकर्मियों से बदसलूकी करने लगे इतने में बलीपुर गांव निवासी दीपक पटेल पुत्र कल्लू पटेल ने पहुचकर वैक्सीन की डोज को बाहर फेंक दिया। और लगभग 9 शीशी डोज टूट गयी। चारो तरफ अफरा तफरी मच गई। सूचना पर पहुची पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की टीम ने जांच पड़ताल कर पुलिस की मौजूदगी में पुनः टीकाकरण शुरू कराया गया। और स्वास्थ्य विभाग सीएचसी सैदाबाद के अधीक्षक के आदेश पर उपद्रवी के खिलाफ उतरांव थाने में तहरीर दी गयी। पुलिस उपद्रवी के खिलाफ कार्यवाही की बात कही।

अफरातफरी, धक्कामुक्की के बीच चनेथू प्राथमिक विद्यालय पर हुआ टीकाकरण

चनेथू प्राथमिक विद्यालय पर टीकाकरण

जंघई। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रत्येक गाँव में वैश्विक महामारी कोरोना के बचाव हेतु टीकाकरण चल रहा है जिसके क्रम में प्रतापपुर ब्लॉक से स्वास्थ्य टीम चनेथू प्राथमिक विद्यालय पहुंची।चिलचिलाती धूप में घंटों लाइन लगाकर लोग खड़े रहे अव्यवस्था के बीच धक्कामुक्की भी हुई और लोग लाइन तोड़ कर वैक्सीन लगवाने का प्रयास भी किया जिसके कारण आपस मे लोगों की कहासुनी भी जमकर हुई।स्थित तनावपूर्ण देखते हुए पुलिस चौकी इंचार्ज अजीत उपाध्याय को सूचना दी गई।उन्होंने मौके पर सिपाहियों को भेजा तो दोपहर में पुनःलाइन लगाकर टीकाकरण शुरू किया जोकि सांयकाल तक चलता रहा।ग्रामीणों का कहना है कि हम लोग लाइन लगाकर सुबह से खड़े है लेकिन कुछ लोग लाइन तोड़कर अंदर घुसकर वैक्सीन लगवा कर चले जा रहे हैं इसी के कारण अव्यवस्था उत्पन्न हुई।

वैक्सीन लगवाने की लगी होड़ अपनी बारी का इंतजार करते रहे लोग

वैक्सीन लगवाने के लिए बाहर खड़े लोग अपनी बारी का इंतजार करते

जारी। जसरा विकासखंड के जारी स्थित कृषक इंटर कॉलेज में सुबह 10:00 बजे से दिन शुक्रवार को कैंप शिविर में ग्रामीणों की जुटी भीड़ बारा, नोडल अधिकारी डॉक्टर तरुण पाठक (अधीक्षक) ने बताया कि ढाई सौ वैक्सीन आज लगनी है लेकिन यह तीन सौ पार कर गया वैक्सीन की पहली और दूसरी डोज आज सुबह से कृषक इंटर कॉलेज में लगाई जा रही है आशा एएनएम बहुओ द्वारा वैक्सीनेशन का कार्य किया जा रहा है और लोग बढ़-चढ़कर वैक्सीन लगवा रहे हैं जिसमें आशा संगिनी लवली बासु अंजलि केसरवानी मंजू देवी अन्य स्टाफ के साथ वैक्सीन लगाने का काम किया जा रहा हैं।. इसी तरह खेरहट खुर्द ग्राम पंचायत में वैक्सीनेशन कैंप में डॉक्टर तरुण पाठक नोडल अधिकारी- बारा निरीक्षण के दौरान वैक्सीनेशन का जायजा लिया।

न्यूज झरोखा

सिरसा गंगा नदी में कूदा अज्ञात बृद्ध मौके पर हुई मौत

वृद्ध को गंगा नदी से निकालते

सिरसा/मेजा। मेजा थाना क्षेत्र के सिरसा पुलिस चौकी अंतर्गत फेरी गंगा घाट पर उस वक्त हड़कंप मच गया जब एक अज्ञात वृद्ध ने गंगा नदी मे छलांग लगा दी। वहां मौजूद लोगों ने बचाने की कोशिश की, तब तक वृद्ध की मौत हो चुकी थी। मिली जानकारी के अनुसार सिरसा फेरी गंगा घाट पर एक वृद्ध कूद गया। गंगा घाट पर मौजूद लोगों व नाविकों के द्वारा उसे बचाने का पूरा प्रयास किया गया और बाहर निकाला गया। तब तक वृद्ध व्यक्ति दम तोड़ चुका था। इस घटना से लोगो मे तरह-तरह की चर्चा बना हुआ है। जिसकी सूचना लोगों ने सिरसा पुलिस को दी। मौके पर पहुंचे सिरसा पुलिस चौकी प्रभारी हरीशचंद्र शर्मा शव की शिनाख्त करवाने मे जुटे रहे। लेकिन व्यक्ति की शिनाख्त नहीं हो पाई। लिखा पढ़ी कर पुलिस अगली कार्रवाई में जुटी हुई है। समाचार लिखे जाने तक वृद्ध की शिनाख्त नहीं हो पाया था।

वन विभाग करछना ने रक्षां सूत्र बाँध कर लिया संकल्प

वृक्षों में रक्षा सूत्र बांधते कमलेश द्विवेदी

करछना। विकास खंड के अंतर्गत आने वाले सभी सडक मार्गों के किनारे लगाएं गयें वृक्षों की रक्षा करने हेतु चलाए जा रहे रक्षां सूत्र बाँध कर, पर्यावरण, जलवायु परिपेक्ष्य में वनविभाग द्वारा करछना द्वारा अभियान में शुक्रवार को बेंदो पनासा सड़क मार्ग पर लगाएं गयें वृक्षों की सुरक्षा संकल्प के तहत रक्षा सूत्र बाँध कर जलवायु परिवर्तन सरक्षण अभियान में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख करछना प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी ने बेंदो सड़क मार्ग के किनारे लगाएं गयें वृक्षों की रक्षा सूत्र बाँध कर जलवायु परिवर्तन सरक्षण अभियान का संकल्प लिया, इस मौके पर वन क्षेत्राधिकारी करछना रजनीश परमार्थ की मौजूदगी में रक्षा सूत्र बांधने का कार्यक्रम किया गया, इस मौके पर वन दारोगा आर पी सोनकर, दीलिप वाजपेयी, संतोष पांडेय, गजेंद्र नाथ तिवारी सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित रहे ।

जनवादी क्रांति रथ यात्रा शहर से ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंची

जनवादी क्रांति रथ यात्रा में शामिल लोग

जसरा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के द्वारा पिछड़े समाज को जोड़ने के लिए जनवादी पार्टी सोशलिस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 संजय सिंह चौहान बलिया से लखनऊ तक निकले क्रांति रथ यात्रा का आज दूसरा दिन था। समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष योगेश चन्द्र यादव महानगर अध्यक्ष सै०इफ्तेखार हुसैन नगर महासचिव रवीन्द्र यादव रवि की अगुवाई में हाईकोर्ट से रथ यात्रा निकली। जो विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए नैनी के लेप्रोसी मिशन चौराहा पहुंचे तो बड़ी संख्या मे उपस्थित सपाईयों ने ढोल नगाड़े से क्रांति रथ यात्रा का स्वागत किया। इसी तरह गौहनिया, जसरा बाजार, सेहुड़ा, कपारी, शिवराजपुर, रामभवन चौराहा, बसहरा, जुही चौराहा, नारी बारी,मवैया मोड़, पौशला, खीरी, लेड़ियारी, रत्यौरा आदि जगहो तक गई। जसरा बाजार में सपा व्यापार प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार केसरवानी ने स्वागत करते हुए कहा कि अब भाजपा को अपने किये हुए की सजा भुगतना होगा।

पिछड़े समाज को जोड़ कर 2022 मे अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाना ही जनवादी क्रान्ति रथ यात्रा का मकसद : डॉ0संजय सिंह चौहान

27 साल बाद पिच सड़क पर वाहन चलाएंगे यूपी-एमपी के लोग

आलोक गुप्ता

डिप्टी सीएम, सांसद और विधायक की पहल पर बन रही 1400 मीटर सड़क, एमपीआरडीसी के एमडी, चीफ इंजीनियर ने यूपी में स्थित अवशेष सडक का किया मुआयना

शंकरगढ़। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश को जोड? वाली पटहट रोड का निर्माण कार्य अब शीघ्र ही पूरा हो जाएगा। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य की पहल पर मध्य प्रदेश सरकार ने यूपी की सीमा में पड? वाली अवशेष सडक के निर्माण को हरी झंडी प्रदान कर दी है। इसके बाद एमपीआरडीसी के एमडी, चीफ इंजीनियर और काट्रैक्टर ने उक्त स्थल का निरीक्षण किया, साथ ही अवशेष सडक का चिन्हांकन किया गया।

बताते चलें कि मध्यप्रदेश को जाने वाली यह सडक जनपद के नगर पंचायत शंकरगढ़ को जोड़ती है। इस पर दर्जनों गांव आबाद हैं। 16 किलोमीटर लंबी यह सडक दोनों प्रांतों के लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि एमपी के सीमा वाले गांवों के ज्यादातर लोग खरीदारी, रोजी-रोजगार के सिलसिले में रोजाना शंकरगढ़ आते हैं। इस सडक का निर्माण कार्य पिछले 27 वर्ष से नहीं हुआ था। काफी प्रयास के बाद मध्य प्रदेश सरकार ने इसका निर्माण करवाया, लेकिन उत्तर प्रदेश की सीमा में पड? वाली 1400 मीटर का निर्माण अधूरा रह गया। इसे लेकर स्थानीय कस्बावासियों ने डिप्टी सीएम केशवप्रसाद मौर्य, सांसद डॉ रीता बहुगुणा जोशी, सांसद केशरी देवी पटेल, स्थानीय सांसद डा. अजय कुमार, जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारतीय से मुलाकात की। लोगों की शिकायत काअसर यह हुआ कि डिप्टी सीएम केशवप्रसाद मौर्य ने मध्य प्रदेश शासन से उक्त के संबंध में बात की और अवशेष 1400 मीटर के निर्माण को स्वीकृति प्रदान करवाई। इसके बाद एमपीआरडीसी के एमडी शशांक मिश्र, चीफ इंजीनियर गोविंद, काट्रैक्टर सौरभ सोहगौरा ने शुक्रवार को अवशेष सडक का मुआयना किया। काट्रैक्टर सौरभ ने बताया कि नापजोख हो गई है। कल से निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा। उत्तर प्रदेश की सीमा में यह सडक शंकरगढ़ रेलवे क्रासिंग से पटहट तक अधूरी पड़ी थी। जिसका निर्माण स्वीकृत होने पर क्षेत्रवासियों ने खुशी जाहिर की है। शंकरगढ़ के विहिप के नगर अध्यक्ष सुजीत केसरवानी, सभासद ज्योति केसरवानी, सभासद प्रकाशचंद्र गुप्ता, जिला कोषाध्यक्ष अनूप केसरवानी, व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद्र गुप्ता, महामंत्री रतन केसरवानी, भाजपा के मंडल उपाध्यक्ष सोमनाथ वर्मा सहित तमाम लोगों ने जनप्रतिनिधियों का आभार जताया है।

कौंधियारा पुलिस की बड़ी कार्रवाई वांछित अपराधियों में मचा हड़कंप

अवैध गांजा के साथ एक नफर अभियुक्त गिरफ्तार

जारी। एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी के निर्देश पर पुलिस अधीक्षक यमुनापार व क्षेत्राधिकारी बारा के मार्गदर्शन में वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत अवैध गांजा के साथ

1 नफर अभियुक्त गिरफ्तार

कौंधियारा थाना अंतर्गत कौंधियारा थानाध्यक्ष प्रिंस दीक्षित के कुशल नेतृत्व में उपनिरीक्षक ओम नारायण गौतम मय पुलिस बल के द्वारा निरौधा पुलिया सड़क से मुन्ना पुत्र स्वर्गीय लल्लू अंसारी उम्र करीब 55 वर्ष निवासी शांति नगर जारी थाना कौंधियारा को 600 ग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया गिरफ्तार सुदा अभियुक्त को माननीय न्यायालय भेजा गया।

संविदाकर्मियों ने बिजली विभाग के अधिकारियों के खिलाफ भरी हुंकार

सैकड़ों की संख्या मे संविदाकर्मियों ने पावरहाउस का किया घेराव

अखण्ड भारत सन्देश

सैकड़ों संविदा कर्मियों ने किया पॉवर हाउस का घेराव

सिरसा/मेजा। मेजारोड के 33/11 विद्युत उपकेंद्र पर संविदा कर्मियों ने घेराव करते हुए बिजली विभाग के अधिकारियों के प्रति नाराजगी जताई। संविदा कर्मियों का आरोप है कि एक्सईएन, एसडीओ और जेई सभी संविदा कर्मियों को बिजली बिल वसूलने पर दबाव बना रहे हैं, जबकि संविदा कर्मियों का कहना है कि वह मीटर रीडर के पद पर हैं। संविदा कर्मियों ने कहा कि संबंधित बिजली विभाग के बड़े अधिकारी लाखों की तनख्वाह लेकर भी बिजली बिल नहीं वसूल रहे हैं और 8-10 हजार रुपए तनख्वाह वाले संविदा कर्मियों के ऊपर बिल वसूलने का दबाव बना रहे हैं।जिसका संविदा कर्मियों के सुपरवाइजर मेजा बिलिंग इंचार्ज अरविन्द पाण्डेय के द्वारा विरोध किया गया तो बिजली विभाग के अधिकारियों ने उक्त सुपरवाइजर के खिलाफ एफ आई आर दर्ज करा दिया। वहीं शुक्रवार को मुखर हुए संविदा कर्मियों ने पावर हाउस का घेराव करते हुए कहा कि सुपरवाइजर के खिलाफ हुए मुकदमों को जब तक वापस नही लिया जाएगा तब तक हम लोग कार्य का बहिष्कार करेंगे। संविदा कर्मियों ने एक्सियन, एसडीओ व जेई के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस मौके पर बिलिंग इंचार्ज कोरांव विनय मिश्रा, अनुप तिवारी, अमरेश त्रिपाठी, अभिषेक सिंह, दिलीप यादव, धीरज यादव, मुकेश मिश्रा, ज्ञान बाबू बिंद, शिवम तिवारी, मंजेश यादव, दिनेश मिश्रा सहित कई कर्मचारी मौजूद रहे।

बाईस में बनेगी समाजवादी सरकार : रेवती रमण सिंह

अखंड भारत संदेश

किसानों की अनदेखी पड़ेगी मंहगी, राजेश पाण्डेय

कोरांव। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवम राज्यसभा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने कोरांव विधानसभा अंतर्गत विभिन्न ग्राम सभाओं का औचक दौरा किया ,और साथ ही साथ पार्टी नेताओं से मुलाकात कर उनके समस्याओं को जाना। इस मौके पर जगह जगह स्थानीय लोगों एवं समाजवादी पार्टी के कार्यकताओं द्वारा फूल मालाओं से लादकर उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। उक्त मौके पर सपा सांसद ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सभी कार्यकर्ता आगामी विधानसभा के चुनाव की तैयारियों में जी जान से जुट जाए क्योंकि अब चुनाव में ज्यादा वक्त नहीं रह गया है और मौजूदा सरकार के जन विरोधी नीतियों से त्रस्त होकर जनता समाजवादी सरकार बनाने के लिए आतुर है। इसी क्रम में पार्टी के वरिष्ठ नेता मानिक लाल सिंह पूर्व प्रधान लेडियारी और वरिष्ठ समाजसेवी कामता सिंह बघेल अरुवारी इन दोनों के विगत दिनों आकस्मिक निधन होने पर उनके आवास पर परिजनों से मिलकर शोक संवेदना व्यक्त किया। वरिष्ठ समाजवादी नेता राजेश पांडे ने कहा कि यह सरकार किसान विरोधी सरकार है जो कि लगातार यूपी के बॉर्डर पर बैठे आंदोलनरत किसानों की अनदेखी कर रही है और आए दिन वहां पर किसान शहीद हो रहे हैं लेकिन सत्ता पर बैठे जिम्मेदार लोग उन किसानों के मांगों पर कोई ध्यान नहीं दे रही है जोकि निंदनीय है। उन्होंने कहा कि यदि शासन द्वारा किसानों की मांगों पर अविलंब ध्यान नहीं दिया गया तो निश्चित ही हिंदुस्तान के किसानों के द्वारा एक बड़ा आंदोलन होगा जिसकी जवाबदेही पूर्णतया सरकार की होगी। यहां ललन सिंह जिला सचिव दिलावर सिंह पप्पू यादव विधानसभा अध्यक्ष मेजा जोगिंदर सिंह देव शंकर दुबे बब्बू गौतम रामदेव निडर मेहताब खान नगर अध्यक्ष हरे कृष्ण यादव ओमप्रकाश कुशवाहा विधानसभा अध्यक्ष मासूक अली विजय केसरी रामकृपाल कोल पूर्व विधायक प्रमोद मिश्र पयासी लालजी पाल निराला दिनेश पटेल ब्लॉक अध्यक्ष सहादत अली गुलफाम खान महिला नेता अनीता शुक्ला राम गोपाल सिंह पप्पू सिंह प्रशांत सिंह पटेल भागीरथी केसरी आदि लोग रहे।

यातायात नियमों के उल्लंघन पर पांच ट्रक सीज

अखंड भारत संदेश

सीज किये गये ट्रक

मालवाहक से तीन मवेशी भी हुए बरामद

शंकरगढ़। यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर पुलिस ने पांच ट्रकों को सीज कर दिया है। इस कार्यवाही से ओवरलोडिंग, रफ ड्राइविंग, गलत पार्किंग और अवैध परिवहन करने वालों में हड़कंप मचा हुआ है। एसओ कुलदीप कुमार तिवारी ने बताया कि अवैध खनन और परिवहन के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के क्रम में आज शंकरगढ़ पुलिस टीम ने वाहनों की चेकिंग की। इस दौरान पांच ट्रकों को सीज किया गया है। एसओ ने बताया कि एमवी एक्ट में सीज किए गए ट्रकों यूपी70-एफटी-7162 (चालक समर बहादुर, बेलहा, खीरी), यूपी70-एफटी-3466 (चालक नसीम खां, हज्जी टोला, शंकरगढ़), यूपी63-एटी-3422 (चालक दीनानाथ यादव, सरसेपुर, औराई, भदोही), यूपी70-सीटी-6828) और जेएच02-एएफ-1974 (चालक जोगेश यादव, टेरवा, मेहनपुर, गया, बिहार) के खिलाफ आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है।

मालवाहक से तीन मवेशी बरामद

शंकरगढ़। पुलिस ने मालवाहक से तीन मवेशियों को बरामद किया है। एसओ कुलदीप कुमार तिवारी ने बताया कि चलाए जा रहे अभियान के क्रम में आज ग्राम बंधवा में मान सिंह के मकान के समीप से एक मालवाहक को रोका गया, जिसमें तीन मवेशी बरामद हुए। वाहन पर तीनों पशुओं को क्रूरता पूर्वक लादा गया था। गिरफ्त में आए अभियुक्त मानिकचंद पुत्र मास्टर थारू (निवासी मोदीनगर, शंकरगढ़ कस्बा, शंकरगढ़) के खिलाफ आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

ग्रामीणों की मुस्तैदी देख मवेशी छोड़कर भागे पशु तस्कर

प्रतापपुर। पिकअप में लादकर ले जा रहे मवेशी तस्करों को ग्रामीणों ने दौड़ाया तो मवेशी को छोड़कर मौके से पशु तस्कर फरार हो गये। भोगवारा-उग्रसेनपुर मार्ग पर शुक्रवार की सुबह लगभग 5 बजे एक पिकअप में मवेशी को लादकर ले जा रहे थे। रायपुर गाँव के सामने ग्रामीणों ने बेतरतीब ढंग लदे मवेशियों को देखा तो चालक को रोकने के दौड़ाया तो चालक ने पिकअप की गति बढ़ा दी और कुछ दूरी पर जाकर मवेशियों को छोड़कर तस्कर मौके से पिकअप लेकर फरार हो गए।ग्रामीण जब वहां पहुँचे तो देखा मवेशियों के पैर रस्सी से बंधे थे और रगड़ की वजह से खून निकल रहा था लोगो ने तुरंत रस्सी काटकर उन्हें आजाद कर पानी पिलाया।

खबर संक्षेप

तैयार किए गए सहायक पंचायत एकाउटेंट की मेरिट लिस्ट

घूरपुर। उत्तर प्रदेश सरकार के पंचायत सहायक अकाउंटेंट भर्ती के क्रम में शुक्रवार को कौधियारा ब्लॉक के पवंरी के पूर्व माध्यमिक विद्यालय पर ग्राम सभा के उपस्थित सदस्यों एवं ग्राम सभा के संभ्रांत लोगों के समक्ष ग्राम विकास अधिकारी नील कृष्ण प्रजापति एवं प्रधान कौशलेश कुमार यादव एवं रोजगार सेवक राजेश सिंह ने अभ्यर्थियों द्वारा किए गए आवेदन के क्रम में प्रमाण पत्रों को जांच कर मेरिट बनाई। जिसमें प्रथम स्थान पर चयन अनिल कुमार बिंद का हुआ , दूसरे स्थान पर कमलेश कुमार प्रजापति व तीसरे स्थान पर आकाश बिंद रहे। फार्म भरने वाले अन्य अभ्यर्थियों में दीपक कुमार बिंद ,सत्यदेव यादव, शिवधाम यादव, अनीश कुमार, रमेश कुमार कुशवाहा, सोनू कुमार, कुलदीप कुमार, सुनील कुमार बिंद ,रंजीत कुमार कुशवाहा, लाल चंदन ,लवकुश यादव रहे बैठक में अन्य महत्वपूर्ण लोगों में बलराम सिंह यादव ,जी.जी.एम. कान्वेंट स्कूल के प्रबंधक दिनेश प्रजापति तथा गांव के सम्मानित सदस्यों में ब्रह्मानंद यादव, राम लखन आदिवासी ,वीरेंद्र विश्वकर्मा राकेश कुमार आदिवासी, रमेश भारतीय ,रीता देवी, सीमा देवी, श्यामकली, अशोक भारतीया, अनूप पांडे,अजय प्रजापति, समय लाल बिंद, मुन्ना बिंद ,रामसिंह बिंद, बहादुर यादव, गिरीश चंद्रबिंद ,पिंटू आदि रहे।

उद्यमियों की समस्याओं को प्राथमिकता पर निस्तारित करने का डीएम ने दिये निर्देश

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में उद्योग बन्धु की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

उद्योग बन्धु की बैठक को सम्बोधित करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शुक्रवार को जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित विभागों को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया है कि उद्योग बन्धुओं से सम्बंधित जो भी प्रकरण है या आ रहे है, उसे प्राथमिकता के तौर पर निस्तारित करना सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने उद्यमियों से सम्बंधित समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित किये जाने के निर्देश दिये साथ ही साथ यह भी निर्देशित किया कि इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता न बरती जाये। उन्होंने निवेश पोर्टल पर दर्ज आवेदन पत्रों को निर्धारित समय सीमा में अनिवार्य रूप से निस्तारित करने का निर्देश सभी सम्बंधित विभागों को दिया है। साथ ही साथ यह भी हिदायत दी कि निर्धारित समय सीमा के अंदर आवेदन पत्रों का निस्तारण न करने वाले अधिकारियों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जायेगी। उन्होंने पूरे प्रकरण को गम्भीरता से देखते हुए उद्योग बन्धुओं से निस्तारण की स्थिति जाना, जिसमें कुल प्रकरणों में जो भी लम्बित है, उसे सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को गुणवत्ता के साथ निस्तारित करने के निर्देश दिये है। बैठक में एडीएम सिटी श्री अशोक कुमार कनौजिया, जी0 एम0 डी0 आई0 सी0 ए0 के0 चैरसिया, उप निदेशक कृषि श्री विनोद कुमार सहित सम्बंधित अधिकारी एवं उद्योग बन्धुओं में श्री डी0एस0 दरबारी, श्री अनिल अग्रवाल, मोहित नय्यर, श्री अनिल श्रीवास्तव सहित अन्य उद्योग बन्धु उपस्थित रहे।

हाईकोर्ट समाचार

मृत दिव्यांगों के नाम पर दूसरे को पेंशन जारी रखने के मामले में हाईकोर्ट सख्त

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दिव्यांग पेंशन पाने वाले लोगों की मौत के बाद अधिकारियों की मिलीभगत से फर्जी लोगों को पेंशन भुगतान जारी रखने के मामले को लेकर कायम आपराधिक केस को चार माह में निर्णीत करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने सिविल जज जूनियर डिवीजन मथुरा से कहा है कि धारा 156(3) के तहत दाखिल अर्जी को दोनों पक्षों को सुनकर कोई वैधानिक अड़चन न हो तो नियत समय में विचारण पूरा करें।यह आदेश न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता ने माधव सिंह की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। याची के अधिवक्ता का कहना था कि याची ने मथुरा के गोवर्धन विकास खंड में थाना भगोरा ग्राम बछगांव के निवासी ओंकार, भागीरथ, प्रेमवती, होतीलाल के खिलाफ फर्जी दिव्यांग पेंशन लेने के आरोप में अर्जी दी है। उसकी शिकायत पर जांच में फर्जी लोगों द्वारा पेंशन लेने की पुष्टि हुई और 29 जनवरी 18 से पेंशन बंद कर दी गई। जिला दिव्यांग सशक्तिकरण अधिकारी ने बैंक को वसूली कार्रवाई करने का पत्र लिखा है। कुछ वसूली भी की गई है। 23 जुलाई 19 को कोर्ट में दाखिल अर्जी को निर्णीत न कर किसी न किसी कारण से लटकाए रखा गया है, जिसे तय करने का कोर्ट ने निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता ने माधव सिंह की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। याची के अधिवक्ता का कहना था कि याची ने मथुरा के गोवर्धन विकास खंड में थाना भगोरा ग्राम बछगांव के निवासी ओंकार, भागीरथ, प्रेमवती, होतीलाल के खिलाफ फर्जी दिव्यांग पेंशन लेने के आरोप में अर्जी दी है।

पुलिस अभिरक्षा में मौत के आरोपी कांस्टेबल को जमानत पर रिहा करने से हाईकोर्ट ने किया इंकार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पुलिस अभिरक्षा में मौत के आरोपी शहडोल, मध्य प्रदेश के पुलिस कांस्टेबल शेर अली की जमानत अर्जी खारिज कर दी है। कोर्ट ने कहा है कि पुलिस का दायित्व कानून व्यवस्था बनाए रखने का है। पुलिस अभिरक्षा में मारपीट, टार्चर के बाद मौत सभ्य समाज के खिलाफ है। सुप्रीम कोर्ट ने भी ऐसी घटनाओं को लेकर नाराजगी जताई है। ऐसे में आरोपी की रिहाई की गई तो मुकदमे का विचारण प्रभावित हो सकता है। कोर्ट ने जमानत पर रिहा करने से इंकार कर दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति समित गोपाल ने शहडोल के पुलिस कांस्टेबल शेर अली की अर्जी पर दिया है। वाराणसी के संजय कुमार गुप्ता ने अदालत के आदेश से शहडोल पुलिस पर अपने पिता गोरखनाथ उर्फ ओम प्रकाश गुप्ता का अपहरण कर हत्या करने के आरोप में एफआईआर दर्ज कराई। जिसमें दरोगा शंखधर द्विवेदी, शेर अली, दिग्विजय पांडेय, जगत सिंह, आर राजन, सुरेश प्रसाद अग्रवाल, महेश चंद्र अग्रवाल व कुमार गेस्ट हाउस में ठहरे एक अज्ञात व्यक्ति को आरोपित किया गया है।वाराणसी के लंका थाना में दर्ज प्राथमिकी में शहडोल पुलिस पर अपहरण कर हत्या का आरोप लगाया गया है। पुलिस घर से मृतक को पकड़कर ले गई। शिकायतकर्ता वाराणसी के थानों में पता लगाने को भटकता रहा। एसएसपी से भी शिकायत की। सुनवाई नहीं हुई। 2 मार्च 97 को फूलपुर पुलिस ने बताया कि शहडोल कोतवाली से सूचना आयी है कि ओम प्रकाश गुप्ता की मौत हो गई है। घर वाले शहडोल गए। पुलिस ने लाश वाराणसी नहीं लाने दिया। धमकी दी और वहीं अंतिम संस्कार किया गया। वहां अखबारों में पुलिस अभिरक्षा में मौत की खबर थी। वाराणसी आने पर पुलिस को जानकारी दी। किन्तु एफआईआर दर्ज नहीं की गई तो कोर्ट की शरण ली। जांच पुलिस से हटाकर एसआईएस को सौंपी गई। जिसने 23 अक्तूबर 98 को फाइनल रिपोर्ट पेश की। शिकायतकर्ता की आपत्ति पर सीजेएम वाराणसी ने पुलिस रिपोर्ट अस्वीकार करते हुए 5 जून 2007 को अभियुक्तों को सम्मन जारी किया। हाजिर न होने पर गैर जमानती वारंट भी जारी किया गया। आरोपी बचने के लिए अदालतों के चक्कर लगाते रहे। शिकायत कर्ता का आरोप है कि कोतवाली में मौत के बाद अस्पताल ले जाया गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शरीर पर चोटें बतायी गई हैं। जबकि याची का कहना था कि मृतक धोखाधड़ी के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, सीने में दर्द होने पर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। नैसर्गिक मौत है।

जेल वार्डर भर्ती का रिकार्ड तलब : ओबीसी अभ्यर्थी को आरक्षण का लाभ नहीं देने का मामला

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने ओबीसी अभ्यर्थी को सामान्य वर्ग में शामिल कर चयन प्रक्रिया से बाहर करने के मामले में पुलिस भर्ती बोर्ड से जेल वार्डर भर्ती-2018 के ओबीसी अभ्यर्थी आशुतोष मौर्या का रिकॉर्ड तलब किया है। जेल वार्डर व घुड़सवार पुलिस भर्ती-2018 के ओबीसी अभ्यर्थी आशुतोष मौर्या की याचिका पर न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव की एकल पीठ सुनवाई कर रही है। याची के अधिवक्ता सुनील यादव का कहना था कि याची ने आवेदन के समय निर्धारित समय सीमा में जारी ओबीसी जाति प्रमाणपत्र का विवरण आवेदन में भरा था और दस्तावेजों की जांच के समय ऑनलाइन आवेदन पत्र में संदर्भित जाति प्रमाणपत्र के साथ ही एक अन्य अपडेटेड प्रमाण पत्र जमा किया था। जबकि भर्ती बोर्ड ने अभ्यर्थी के अपडेटेड जाति प्रमाणपत्र के आधार पर उसे सामान्य अभ्यर्थी के रूप में मानते हुए ओबीसी आरक्षण का लाभ नही दिया, परिणाम स्वरूप ओबीसी वर्ग की कट ऑफ से ज्यादा अंक हासिल करने के बाद भी अभ्यर्थी को चयन सूची में शामिल नही किया। कोर्ट ने याचिका पर सुनवाई करते हुए भर्ती बोर्ड को 6 अक्तूबर को याची आशुतोष मौर्या के चयन संबंधी रिकॉर्ड को पेश करने का निर्देश दिया है।

कांस्टेबलों से अधिक वेतन भुगतान की वसूली का आदेश हाईकोर्ट ने किया रद्द

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आजमगढ़ में तैनात दो पुलिस कांस्टेबलों के वेतन से अधिक भुगतान की वसूली का आदेश रद्द कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि वसूली का आदेश जारी करने से पूर्व याची कांस्टेबलों को उनका पक्ष रखने का मौका नहीं दिया गया। वसूली से उन पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा इसलिए सुनवाई का अवसर देना जरूरी है। कांस्टेबल दिनेश चंद्र त्रिपाठी और भरत सिंह की याचिका पर यह आदेश न्यायमूर्ति अश्वनी कुमार मिश्र ने याची के अधिवक्ता निर्भय कुमार भारती को सुनकर दिया है। याची के अधिवक्ता का कहना था कि याचीगण के वेतन निर्धारण में विभाग की ओर से गलती की गई। इसके बाद अधिक भुगतान की वसूली का आदेश जारी कर दिया गया। ऐसा करने से पूर्व याचीगण का पक्ष नहीं सुना गया। कोर्ट ने इस मामले में प्रदेश सरकार से जवाब मांगा था। दाखिल जबाव में कहा गया कि यदि याचीगण का पक्ष सुन भी लिया जाए तो इससे रिकवरी आदेश पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। कोर्ट का कहना था कि सरकार के जवाब से स्पष्ट है कि याचीगण को उनका पक्ष रखने का मौका नहीं दिया गया। रिकवरी आदेश का उन पर सिविल प्रभाव पड़ेगा इसलिए उनको अपना पक्ष रखने का अवसर देना जरूरी है। कोर्ट ने सात जुलाई 2020 को पारित रिकवरी आदेश रद्द कर दिया है। तथा याचीगण का पक्ष सुनकर नए सिरे से आदेश पारित करने की छूट दी है।

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के मामले में सुनवाई एक सितंबर को

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य की फर्जी डिग्री मामले में न्यायालय ने प्रारंभिक जांच पूरी करने के लिए इंस्पेक्टर कैंट को और समय देते हुए जांच पूरी करने का आदेश दिया। कैंट थाने की ओर से कोर्ट में अर्जी देकर जांच पूरी करने के लिए समय की मांग की गई। अर्जी में कहा गया कि अन्य मामलों में अधिक व्यस्तता होने के कारण जांच पूरी नही हो सकी है। जांच पूरी करने के लिए और समय चाहिए।एसीजेएम नम्रता सिंह ने प्रारंभिक जांच पूरी करने के लिए इंस्पेक्टर कैंट को एक सितंबर तक मोहलत देते हुए कहा कि केशव मौर्य के उत्तर मध्यमा द्वितीय वर्ष की डिग्री जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्राप्त है व हाईस्कूल का सर्टिफिकेट जिस पर पेट्रोल पंप हासिल करने का आरोप है की जांच कर रिपोर्ट दें। अगली सुनवाई एक सितंबर को होगी।

सांसद अतुल राय की अग्रिम विवेचना अर्जी पर फैसला सुरक्षित

प्रयागराज। दुराचार के मुकदमे में आरोपित घोसी लोकसभा सीट से बसपा सांसद अतुल राय के अग्रिम विवेचना प्रार्थना पत्र पर एमपी एमएलए कोर्ट ने आदेश सुरक्षित किया। आरोपित सांसद ने कोर्ट में अर्जी देकर दुराचार के मुकदमे में फिर से विवेचना कराए जाने की मांग की थी।अभियोजन की ओर से राजेश गुप्ता और आरोपित की ओर से उपस्थित अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने के बाद स्पेशल कोर्ट के न्यायाधीश आलोक कुमार श्रीवास्तव ने आदेश सुरक्षित कर लिया। आदेश सुनाने के लिए दो सितंबर की तिथि नीयत की। उल्लेखनीय है कि अतुल राय पर दुष्कर्म और ब्लैकमेल करने का मुकदमा दर्ज कराने वाली पीड़िता और इस मामले के एक गवाह ने गत दिनों सुप्रीमकोर्ट के सामने खुद को आग के हवाले कर लिया था। दोनों की मौत हो चुकी है।

लापता रियल एस्टेट कारोबारी का शव यमुना पुल के नीचे से बरामद

अखंड भारत संदेश

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के गंगोत्री नगर के रहने वाले एक रियल एस्टेट कारोबारी का शव शुक्रवार को यमुना पुल के नीचे से बरामद किया गया। पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। वहीं परिजनों में कोहराम मचा रहा।

जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र के गंगोत्री नगर निवासी अनूप कुमार जयसवाल रियल एस्टेट का कारोबार करते थे। वह अपने भाई के साथ और एक अन्य व्यक्ति के साथ में मिलकर कारोबार करते चले आ रहे थे। बताया जाता है कि गुरुवार को वह स्कूटी और मोबाइल लेकर निकले, लेकिन घंटों लौटकर जब वह अपने घर पर नहीं पहुंचे तो परिजनों को चिंता सताने लगी और हर उस स्थान पर खोजबीन की गई, जहां पर उसके मिलने की उम्मीद, लेकिन कहीं पर भी कोई सुराग नहीं लगा। इसी बीच रियल एस्टेट कारोबारी पवन कुमार जयसवाल के साथी कारोबारी ने पुलिस को तहरीर देकर गुमशुदगी की रिपोर्ट संबंधित थाने में दर्ज करा दी। इधर शुक्रवार को लापता रियल एस्टेट कारोबारी की स्कूटी और मोबाइल यमुना पुल के ऊपर लावारिस हालत मिलने पर हड़कंप मच गया और पुल के नीचे से उसके शव को बरामद किया गया। पुलिस के मुताबिक मृतक के कब्जे से सुसाइड नोट भी बरामद किया गया है। जिसमें कारोबार को लेकर जिक्र किया गया है। हालांकि पुलिस जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए।

स्कूल में महिला शिक्षिका की मौत परिजनों में मचा रहा कोहराम

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के नई बाजार की रहने वाली एक शिक्षिका की मौत शुक्रवार को स्कूल में हो गई। जिससे साथी कर्मचारियों के अलावा परिजनों में कोहराम मचा रहा। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। जानकारी के मुताबिक मीरजापुर जिले के जिगना क्षेत्र की रहने वाली कल्पना कुशवाहा (30) पत्नी रितेश कुशवाहा की शादी बीते लगभग पांच वर्ष पूर्व हुई थी। वह घूरपुर थाना क्षेत्र के हथिगनी, कर्मा के समीप सरकारी प्राथमिक स्कूल में बतौर शिक्षिका के रूप में तैनात थी। प्रतिदिन की तरह वह अपने सहपाठी महिला शिक्षिका पूजा मिश्रा के साथ स्कूटी पर सवार होकर शुक्रवार सुबह लगभग 10:00 बजे स्कूल पहुंची। बताया जाता है कि वह ऑफिस में बैठकर सरकारी कार्य को कर रही थी, तभी अचानक गस्त खाकर फर्श पर गिर पड़ी। यह देख साथी कर्मचारियों में हड़कंप मच गया और आनन-फानन में उसे इलाज के लिए पहले स्थानीय अस्पताल शहर के लिए रेफर कर दिए। सारण पहुंचने पर जांच पड़ताल के बाद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिए। मृतका की एक चार वर्षीय बच्ची है। जबकि उसका पति प्राइवेट कोचिंग में पढ़ाते हैं।

मुठभेड़ में घायल बदमाश गिरफ्तार

मुठभेड़ में घायल गिरफ्तार बदमाश के फरार दो साथी गिरफ्तार

घूरपुर। मंगलवार की रात पुलिस मुठभेड़ में घायल गिरफ्तार बदमाश के मौके से फरार अन्य दो साथियों को पुलिस ने शुक्रवार के दिन गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पास से तमंचा कारतूस भी बरामद किया है। बीते मंगलवार की रात गौहनिया स्थित शहीद अजय पेट्रोल पंप पर लूट की फिराक में अपने साथियों के साथ पहुंचें लूट और डकैती के मुख्य सरगना सोनू डांडी पुलिस मुठभेड़ में घायल हो गया था जिसे पुलिस गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। उसके अन्य दो साथी मोहम्मद नफीस पुत्र मकबूल, मोहम्मद आरिफ उर्फ चुनमुन पुत्र मोहम्मद हसीम निवासीगण भड़रा नैनी को करमा करछना मार्ग से एसओ राजेश उपाध्याय ने मय फोर्स घेराबंदी कर गिरफ्तार कर लिया। तलाशी पर 315 बोर का एक तमंचा कारतूस व एक चाकू बरामद हुआ। पुलिस ने दोनों को जेल भेज दिया।

जर्जर पोल से हो रही है विद्युत आपूर्ति, दुर्घटना की आशंका

दुर्घटना को दावत दे रहा है जर्जर पोल

अखंड भारत संदेस

करछना। विकासखंड करछना क्षेत्र के अंतर्गत पचदेवरा स्थित गौहनिया - पचदेवरा मार्ग के बगल 100 केवीए के ट्रांसफार्मर में लगे बिजली का पोल टूटकर क्षतिग्रस्त हो गया है। वही कभी भी धराशाई हो सकता है। टूटा हुआ पोल लगातार हादसों को दावत दे रहा है। मार्ग से रोजाना हजारों की संख्या में राहगीर गुजरते हैं। टूटे हुए पोल के संबंध में कई बार स्थानीय लोगों ने विभागीय अधिकारी व कर्मचारियों से शिकायत की है। किंतु बिजली विभाग के उदासीनता के चलते टूटे हुए पोल को बदलने की जहमत नहीं उठाई जा रही है। जिसको लेकर स्थानीय लोगों में गहरा आक्रोश व्याप्त है।

आगामी विधानसभा चुनाव में अपना दल कमेरावादी बड़ी पार्टी के रूप में उभरेंगीं : सुशील

घूरपुर। वर्तमान समय केंद्र एवम प्रदेश मे सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा पार्टी देश के युवाओं, छात्रों एवम कमेरा समाज के साथ छल कर रही हैं। आगामी 06माह के अंदर प्रदेश मे विधानसभा चुनाव होनें हैं। जिसमें अपना दल कमेरावादी पार्टी एवम बड़ी पार्टी के रूप मे उभरेगी और सत्ता मे हिस्सेदारी करते हुए प्रदेश के कामगार, मजदूर, नौजवानों के हित मे अनेकों ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न होंगें। उक्त बातें अपना दल कमेरावादी के युवा नेता एवम बारा विधानसभा के मीडिया प्रभारी सुशील पटेल ने क्षेत्र के कुल्हड़िया, काँटी, बारी बजहिया, अमरेहा, दौना, टिकरी, चितौरी आदि गावों मे जनसम्पर्क के दौरान कही। साथ ही आगामी 30अगस्त को गंगापार के सहसों मे स्थित बसंत गेस्ट हाउस मे आयोजित पार्टी के कार्यकर्ता सम्मलेन को सफल बनाने के लिए आम जनों से पहुंचने की अपील की। उक्त आयोजन मे पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्षा कृष्णा पटेल बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित करेंगी।

एडीओ पंचायत करछना चंदौली में सहायक ऑपरेटर का किया चयन

सहायक ऑपरेटर चयन में उपस्थित अधिकारी

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खंड के ग्राम पंचायतों में सहायक ऑपरेटर भर्ती प्रक्रिया का मैरिट के आधार पर नियुक्ति का कार्य कराया जा रहा है, न्याय पंचायत वार गांवो में सहायक ऑपरेटर का मैरिट के आधार पर चयन किया जा रहा है, इसी क्रम में विकास खंड करछना के एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा व ग्राम पंचायत सचिव मनीष यादव की मौजूदगी में ग्राम पंचायत चंदौली में बैठक के दौरान चयन किया गया, जिसमें 19 लोगों ने आवेदन किया था, जिसमे श्याम सिंह पुत्र रामचंद्र का मैरिट के आधार पर चयन किया गया इस मौके पर गांव के प्रधान व बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित रहे ।

क्षेत्र के किसानों ने प्रमुख को सौंपा ज्ञापन

जसरा के दर्जनों गांव के किसानों ने प्रमुख जसरा को ज्ञापन सौंपते।

जसरा। जसरा के दर्जनों गांवों के किसान शुक्रवार को एकजुट होकर प्रमुख जसरा अजीत सिंह को आवारा गोवंशों से खड़ी फसल को बचाने के लिए ज्ञापन देकर गुहार लगाया है। किसानों ने प्रमुख को बताया कि फसलों को चरने के बाद हम सब किसानों के सामने बच्चों के भरण पोषण का संकट बन जाता है। जसरा ब्लॉक में अन्नदाता कहा जाने वाला किसान आज दर दर भटक रहा है। उसे अपनी गाढ़ी कमाई की फसल को बचाने के लिए ब्लॉक से लेकर जिले तक दौड़ना पड़ रहा है लेकिन किसानों की सुनने वाला कोई नहीं है । शुक्रवार को दर्जनों गांवों के किसान जसरा ब्लॉक प्रमुख अजीत सिंह को ज्ञापन सौंपकर अपनी फसल को बचाने के लिए गुहार लगाया है। किसानों ने प्रमुख से कहा कि अगर सरकार हमारी फसल को बचाने के लिए आगे नहीं आयेगी तो किसान रोटी बचाने के लिए आर पार की लड़ाई लड़ने के लिए बाध्य होगा और वह दिन दूर नहीं जब किसान सड़क पर आन्दोलित होकर लड़ाई लड़ेगा। किसान ही अन्न पैदा करके सबको भोजन देता है। वही किसान आज आवारा गोवंशों के कारण भुखमरी के कगार पर पहुंच गया है। जिस पर प्रमुख जसरा ने किसानों से ज्ञापन लेकर उन्हें आश्वस्त किया कि आपकी बात उच्चाधिकारियों तक पहुंचाई जायेगी। प्रमुख ने कहा कि अस्थायी गोआश्रय स्थलों की संख्या बढ़वाने के लिए अधिकारियों से बात करने को कहा है और आवश्यक कार्यवाही का आश्वासन दिया है। ज्ञापन देने के लिए बुदांवा, रेरा, गड़रा,अमरेहा, मरुआ, दौना, सुजौना, परसरा, पचखरा सहित दर्जनों गांवों के किसान मौजूद रहे। ज्ञापन देने के लिए सपा के विधानसभा अध्यक्ष भागीरथी बिंद, राजा भैया परसरा,रमाकांत यादव,अरुण द्विवेदी,शंकरलाल गुप्ता,सूर्यबली, रामसुमेर,राजकुमार आदि किसान उपस्थित रहे।

श्रीमद्भागवत कथा एक अमर कथा है : अमरेश जी महाराज

प्रतापपुर। श्री विश्वनाथ मंदिर भोगवारा के प्रांगण में जन कल्याण के लिए सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का शुक्रवार को शुभारंभ हुआ।कथा के प्रथम दिन कथावाचक अमरेश जी महाराज ने कहा श्रीमद्भागवत कथा एक अमर कथा है। इसे सुनने से पापी भी पाप मुक्त हो जाता है। कहा कि वेदों का सार युगों-युगों से मानव जाति तक पहुंचता रहा है। भागवत महापुराण उसी सनातन ज्ञान की पयस्विनी है जो वेदों से प्रवाहित होती चली आ रही है। इसीलिए भागवत महापुराण को वेदों का सार कहा गया है। उन्होंने श्रीमद्भागवत महापुराण का बखान किया। कहा कि सबसे पहले सुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित को भागवत कथा सुनाया था। उन्हें सात दिन के अंदर तक्षक के दंश से मृत्यु होने का श्राप मिला था। कथा अमृत का पान करने से संपूर्ण पापों का नाश होता है।इस मौके पर कमलेश तिवारी अध्यापक, श्रीकांत शुक्ला पूर्व प्रधान, अमिलेश पांडेय, सूर्या यादव, सूर्यकांत मिश्रा, दीपक तिवारी, पीके तिवारी, पूरन तिवारी, बाबा तिवारी, हवलदार तिवारी, शिवशंकर तिवारी, धर्मेश तिवारी, मिठाईलाल यादव, लल्लन तिवारी, धनराज यादव, कालीचरन सरोज, शोभनाथ पाल, रामलखन पटेल, हरिश्चन्द्र बिंद, बुल्ले बिंद, दिनेश श्रीवास्तव, फूलचंद्र यादव, कमल मौर्या,सहित सैकड़ो भागवत कथा प्रेमी उपस्थित रहे।

वाईक नकाबपोश बदमाशों ने नगदी व मोबाइल छीन कर फरार

करछना। थाना क्षेत्र के अंतर्गत मदार्पुर गांव के सामने तीन अलग-अलग बाइक पर सवार अज्ञात छः नकाबपोश बदमाशों ने एक बाइक सवार को घेराबंदी कर के 20 हजार रुपए नकदी समेत एक मोबाइल फोन की छिनौती। प्राप्त जानकारी के मुताबिक मेजा थाना क्षेत्र के सुकाठ गांव निवासी रज्जन लाल पटेल बृहस्पतिवार को रिश्तेदारी में बेंन्दो गांव के लिए गया था। जहां से देर रात 1 बजे के करीब अपनी मोटरसाइकिल से मिजार्पुर- प्रयागराज राष्ट्रीय राज्य मार्ग से घर के लिए लौट रहा था । अभी वह मदार्पुर गांव स्थित प्रकाश हॉस्पिटल के पास पहुंचा था , कि उसी बीच तीन अलग-अलग बाइक पर सवार 6 नकाबपोश बदमाशों ने बाइक को रुकवा कर घेराबंदी कर लिया। जिसके बाद उक्त बदमाशों ने मारना पीटना शुरू कर दिया। जब तक वह कुछ समझ पाता तब तक बदमाशों ने पास में रखें 20 हजार रुपए नकदी समेत मोबाइल फोन को छीन कर फरार हो गए। मामले को लेकर पीड़ित ने पास के एक ढाबे पर जाकर ढाबा संचालक के मोबाइल फोन से डायल 112 पर सूचना दी। सूचना होने पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल कर चली गई।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा यूपी बोर्ड हाई स्कूल वर्ष 2019 अनुक्रमांक 1749331 का अंकपत्र प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है ।

तनु दुबे पुत्री राजेश कुमार
पता- चनेथू जंघई प्रयागराज

कार्यालय राजकीय बालिका इंटर कॉलेज फूलपुर, प्रयागराज

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि 28.08.2021 को विद्यालय की कक्षा 1 से 8 तक की छात्राओं को परिधान क्रय /वितरण हेतु निविदा आमंत्रित किया जाता है ' दिन 12:00 बजे के बाद कोई निविदा प्राप्त होती है तो उसे अमान्य समझा जाएगा, छात्रा संख्या 350 है।

प्रधानाचार्य
राजकीय बालिका
इंटर कॉलेज
फूलपुर, प्रयागराज।

आदेश संख्या - राजकीय/19/2021-22 दिनांक 27.07.2021

जिला कारागार में वर्चुअल विधिक साक्षरता शिविर का हुआ आयोजन

शिविर में स्वास्थ्य व खानपान के बारे में दी गई जानकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के दिशा निर्देश एवं जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संजय शंकर पाण्डेय के मार्गदर्शन में वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला कारागार में वर्चुअल विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव नीरज कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सचिव ने शिविर में बन्दियों से उनकी परेशानियों व विधिक समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी। उनको उनके अधिकारों के बारे में अवगत कराया गया जिसका उनके द्वारा लाभ लिया जा सकता है।

शिविर में उपस्थित बन्दियों के उनके स्वास्थ्य व खान-पान के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जेल में निरूद्ध बन्दियों को विधिक जानकारी प्रदान की गयी एवं बताया गया कि यदि किसी बन्दी के पास अधिवक्ता की सुविधा उपलब्ध नहीं है तो उसे जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा अपने मुकदमे की पैरवी के लिये निःशुल्क अधिवक्ता की सुविधा प्रदान की जाती है। जेल में लीगल एण्ड क्लीनिक की स्थापना की गयी है जिससे किसी बन्दी को कोई समस्या हो तो वह जेल में स्थापित लीगल एण्ड क्लीनिक के माध्यम से विधिक सहायता प्राप्त कर सकता है।

इस अवसर पर अधीक्षक को बताया गया कि जिन बन्दियों की जेल अपील की जानी है उनके प्रार्थना पत्र कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में अति शीघ्र उपलब्ध करायें जिससे बन्दियों की जेल अपील की कार्यवाही की जा सके। इस अवसर पर जेल विजिटर विश्वनाथ त्रिपाठी एडवोकेट ने बन्दियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और प्लीबारगेनिंग सम्बन्धी जानकारी दी। कोविड-19 महामारी को देखते हुये इससे बचाव के लिये जिला कारागार में बन्दियों को मास्क लगाने, बार-बार हाथ धोने, शारीरिक दूरी बनाये रखने के प्रति जागरूक किया गया। जेल अधिकारियों द्वारा बताया गया कि जेल परिसर सेनेटाइज कराया जाता है, शारीरिक दूरी बनाये रखने, मास्क का उपयोग व अन्य बचाव के उपाय का अनुपालन नियमित रूप से किया जाता है। ऐसी स्थिति में विद्वान अधिवक्तागण वादकारीगण से अपेक्षा है कि वे न्यायालय परिसर में मास्क लगा के प्रवेश करें। सोशल डिस्टेसिंग का पालन अवश्य करें जिससे कोविड-19 के संक्रमण को रोका जा सके। इस अवसर पर उप जेलर अवधेश प्रसाद राय, उप जेलर सुनील कुमार द्विवेदी सहित बन्दीगण उपस्थित रहे।

बदमाशों ने परिजनों को बंधक बनाकर जमकर किया लूटपाट

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। हथिगवां थाना क्षेत्र के परेवा नारायनपुर में बीती रात लगभग दो बजे अज्ञात बदमाशों ने घर में घुसकर परिजनों को बंधक बनाकर लूटपाट किया। विरोध करने पर परिजनों को मारपीट कर लहूलुहान कर दिया।

बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के उक्त गांव में बीती रात को अफसर हुसैन के घर के सदस्य खाना खा पीकर रोज की भांति कमरे में सोने चले गए। रात लगभग दो बजे छत पर से सीढ़ी के रास्ते बदमाश घर मे घुस गए और सो रहे परिजनों को बंधक बनाकर जमकर लूटपाट किया। परिजनों के विरोध करने पर बदमाशों ने अफसर हुसैन व पत्नी बेटी को मारपीट कर लहूलुहान कर दिया और कमरे में संदूक आलमारी का ताला तोड़कर उसमें रखे नकदी व सोने चांदी के घर के जेवरात लाखों रुपये के चुरा ले गए। बदमाशों के चले जाने के बाद किसी तरह परिजनों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। शोर मचते ही आस पास के लोग इकट्ठा हो गए, तब तक बदमाश नौ दो ग्यारह हो गए। घटना की जानकारी मिलते ही हथिगवां मौके पर पहुंची और बदमाशों की छानबीन में लग गयी, लेकिन बदमाशों का पता नहीं चल सका। घर के घायल सदस्यों को उपचार के लिए भेजा गया। घटना की तहरीर परिजनों ने पुलिस को दी गई है। पुलिस जांच में जुटी हुई है।

सपा नेता विजय यादव को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। शुक्रवार को पुलिस ने समाजवादी पार्टी के निवर्तमान प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य समाजवादी पार्टी के नेता सदहा निवासी विजय यादव को गिरफ्तार कर लिया। डेढ़ माह पूर्व हुए ब्लाक प्रमुख आसपुर देवसरा चुनाव के समय बवाल में पुलिस ने उन्हें मुख्य आरोपी बनाया था। कुल 161 नामजद सहित ढाई सौ लोगों पर पुलिस ने बलवा सरकारी काम में बाधा चुनाव प्रक्रिया में बाधा पहुंचाना लोक संपत्ति को क्षति पहुंचाने सहित फुल 23 धाराओं में पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया था। पुलिस का कहना है कि उन्हें पट्टी ढकवा मार्ग पर सेतापुर के पास से गिरफ्तार किया गया है। समाजवादी पार्टी के नेता के रूप में विजय यादव जाने जाते हैं

सामाजिक और पुनीत कार्य है बीमाः पूर्णेन्दु

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा कुंडा के विकास अधिकारी नैयर आलम ने अभिकर्ताओं के साथ प्रशिक्षण हाल कुंडा में बैठक की। मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ शाखा प्रबंधक पूर्णेन्दु मरांडी मौजूद रहे। इस दौरान उन्होंने अभिकर्ताओं से कहा कि उत्कर्ष का नमूना गत वर्ष का दूना का लक्ष्य बनाकर सभी अभिकर्ता नव व्यवसाय के लिए जुट जाएं जिससे इस वित्तीय वर्ष में अपने लक्ष्य को पूरा करें। साथ ही साथ क्लब मेम्बर्स की अहर्ता भी पूरी करें। श्री मरांडी ने कहा की अभिकर्ताओं का कार्य बड़ा ही पुनीत कार्य है। जब जब किसी परिवार को बीमा दावा का भुगतान संबंधित अभिकर्ता द्वारा उसके परिवार को मिलता है तो उस समय अभिकर्ता उस परिवार के निगाह में भगवान का स्वरूप होता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में शाखा कुंडा के सहायक शाखा प्रबंधक विक्रय आशीष कुमार सिंह ने अभिकर्ताओं को ज्यादा से ज्यादा क्लब मेम्बर्स बनने के टिप्स दिए एवं विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी तथा विकास अधिकारी नैयर आलम ने सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी लोग इस माह चल रही प्रतियोगिता में जीत हासिल करें साथ ही अपनी आय को भी बढ़ाने के लिए एक लक्ष्य निर्धारित कर नव व्यवसाय करें जिससे अपने लक्ष्य को मार्च से पहले ही पूरा कर सकें । इस अवसर पर उपस्थित रहने वाले अभिकर्ताओं में रामजी मिश्र, विजय किशोर अग्रहरि, धर्मेंद्र प्रताप सिंह नीरज कुमार श्रीवास्तव चंद्रभान वर्मा, श्याम बिहारी, दशरथ लाल यादव, हरिशंकर पटेल, राधेश्याम आदि लोग मौजूद रहे।

भण्डारित आलू की निकासी तीव्र गति से कराएंः जिला उद्यान अधिकारी

प्रतापगढ़। जिला उद्यान अधिकारी डा0 सीमा सिंह राणा एवं शीतगृह स्वामियों ने समस्त भण्डारण करने वाले कृषकों से अपील करते हुये कहा कि शीतगृह में भण्डारित आलू की निकासी तीव्र गति से करायें। उन्होने बताया है कि देश एवं प्रदेश में चल रही आलू के बाजार भाव को दृष्टिगत रखते हुये आलू की निकासी कम है। यदि निकासी इसी गति से चलती रही तो शीतगृहों में आलू अवशेष रहने की सम्भावना रहेगी। शीतगृह स्वामी कृषकों एवं व्यापारियों से समन्वय स्थापित कर आलू निकासी की गति तीव्र करायें। यदि वर्तमान में आलू निकासी में तेजी नही लाई गई तो आने वाले समय में आलू के बाजार भाव का प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

डेंटल केयर सेंटर पर 200 लोगों का हुआ टीकाकरण

रोटरी क्लब और बच्चा बैंक फ्रेंडस ग्रुप के तत्वावधान में हुआ टीकाकरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शुक्रवार को नया माल गोदाम रोड स्थित डा0 अनुराग मिश्रा के डेन्टल केयर सेंटर पर कोविड-19 टीकाकरण कैंप का आयोजन किया गया है। इस कैम्प में लोगों की भारी भीड़ उमड़ी रही। कैम्प को गुब्बारों से सजाया गया था। इस दौरान 200 लोगों का टीकाकरण किया गया।

कैंप स्वास्थ्य विभाग की तरफ से रोटरी क्लब प्रतापगढ़ सेंट्रल और बच्चा बैंक फ्रेंडस ग्रुप, बीबीएफजी के संयुक्त तत्वावधान में लगाया गया था। रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया गुरुवार से ही प्रारंभ हो गई थी। बच्चा बैंक के साथी गार्ड वी0के0 तिवारी और शनि सरोज ने रजिस्ट्रेशन का जिम्मा संभाला था। इस मौके पर रोटरी क्लब प्रतापगढ़ सेंट्रल के रोटेरियन डॉक्टर शिव मूर्ति लाल मौर्य, रोटेरियन उमेश प्रताप सिंह अधिवक्ता, रोटेरियन अश्विन केसरवानी, रोटेरियन शरद केसरवानी बीबीएफजी से डॉक्टर अनुराग मिश्रा, उमा शंकर, राजकुमार मोदनवाल, राजेश चौरसिया आदि ने योगदान दिया। टीकाकरण टीम में अशरफ, सुनील वर्मा, नेहा, अलका, पूनम, सावित्री, शुभम तिवारी का योगदान रहा।

पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को भाजपा नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

हादीहाल में आयोजित हुई शोक सभा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पूर्व मुख्यमंत्री व पूर्व राज्यपाल राजस्थान कल्याण सिंह एवं स्व राजेश्वर पटेल जिला उपाध्यक्ष के निधन पर शोक सभा का आयोजन हादीहाल में किया गया। कैबिनेट मंत्री मोती सिंह ने कहा कि उन्होंने हमको पार्टी में ही नहीं सम्मिलित किया, अपितु नई ऊंचाइयों को छूने का पूरा अवसर प्रदान किया।

शोक सभा को सम्बोधित करते हुए धीरज ओझा ने कहा कि कल्याण सिंह बाबूजी कार्यकर्ता की चिंता करने वाले थे। पूर्व विधायक हरि प्रताप सिंह ने कहा कि बाबूजी के साथ काम करने का अवसर मिला है। इतना इच्छा शक्ति के धनी थे जो जो ठान लेते थे उसको कर देते थे। सदर विधायक राजकुमार पाल ने कहा कि आज हम सभी राजनीति के पितामह बाबूजी के निधन से अपूर्णनीय क्षति हुई है। जिला प्रभारी नागेंद्र रघुवंशी ने कहा कि बाबूजी भारतीय राजनीति को मूल्यों पर आधारित कर सर्वस्पर्शी राजनीति की। शोक सभा में मौजूद अवधेश मिश्र ने बाबूजी के साथ बिताए गए जेलो मे बिताए संस्मरण से सभी कार्यकर्ता के बीच साझा किया। ओम प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि रामजन्म भूमि आंदोलन को सार्थक करने वाले हमारे बीच नहीं रहे। गणेश नारायण मिश्र पूर्व जिला अध्यक्ष ने बताया कि हमने तीन प्रकार के कल्याण सिंह को देखा था। भाजपा अध्यक्ष हरिओम मिश्र ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि राम मंदिर आंदोलन की ताकत रहे कल्याण सिंह के निधन से पार्टी को अपूर्णनीय क्षति हुई है। जिला मीडिया प्रभारी राघवेंद्र नाथ शुक्ल ने कहा कि भारत के सांस्कृतिक उत्थान में उनके योगदान के लिए आने वाली पीढ़ियां हमेशा उनकी आभारी रहेंगी। शोक सभा में पूर्व मंत्री बृजेश शर्मा पूर्व जिला अध्यक्ष गणेश नारायण मिश्र बौद्धिक प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक ओमप्रकाश, रुचि केशरवानी महिला मोर्चा अध्यक्ष, चंद्रप्रकाश पाल, रामजी मिश्र जिला मंत्री, अवनीश सिंह रजत सक्सेना आदि लोग मौजूद रहे।

शिक्षण संस्थान प्रकोष्ठ के संयोजक बनाए गए सतीश सिंह

पट्टी, प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी ने शिक्षण संस्थान प्रकोष्ठ का संयोजक पट्टी तहसील क्षेत्र के मुज्जाही बाजार निवासी सतीश सिंह को बनाया है। भारतीय जनता पार्टी प्रतापगढ़ के जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्रा की संस्तुति पर भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी है इस अवसर पर बात करने पर सतीश सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के विश्वास पर खरा उतरूंगा जनता के हित के लिए हमेशा संघर्ष करता रहूंगा सतीश सिंह के संयोजक बनाए जाने पर ब्लाक प्रमुख बेलखरनाथ धाम सुशील सिंह आसपुर देवसरा ब्लाक प्रमुख कमलाकांत यादव संजीव सिंह पेशकार अजय सिंह टक्कू सनी सिंह जनार्दन सिंह ओमप्रकाश सिंह क्षेत्र पंचायत सदस्य ज्ञानेश्वर तिवारी मदन सिंह शिव कुमार मंडल अध्यक्ष भाजपा जितेंद्र सिंह अरविंद सिंह राजेश सिंह प्रधान प्रतिनिधि पंधारी यादव प्रधान लखीपुर सत्य प्रकाश यादव प्रधान प्रतिनिधि धनेपुर मोहम्मद शमीम प्रधान भुसहर भारत तिवारी शारदा तिवारी सहित सैकड़ों लोगों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर हर्ष व्यक्त किया है।

शहर में शनिवार व अन्य बाजारों में अलग-अलग रहेगी साप्ताहिक बंदी

उद्योग व्यापार मण्डल की बैठक में श्रम अधिकारी ने दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग प्रतिनिधि मंडल के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार केसरवानी के प्रतिष्ठान पर इनकी अध्यक्षता में श्रम विभाग निरीक्षक डॉ महेंद्र प्रताप सिंह के साथ शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में साप्ताहिक बंदी व अन्य व्यापारिक सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारियाँ देने के लिये व्यापारिक बैठक हुई।

बैठक में श्रम अधिकारी ने शहर व ग्रामीणांचलों के साप्ताहिक बंदी के लिए कार्यक्रम बताए जिसमें शहर में शनिवार को बंदी रहेगी। इसके अलावा चिलबिला में मंगलवार को, पट्टी में रविवार को, सिटी व कटरा मेदनीगंज में बुधवार को, कुण्डा में मंगलवार को, मानिकपुर में गुरुवार को, डेरवा में शनिवार को साप्ताहिक बंदी रहेगी। इसके अतिरिक्त छोटे व्यापारियों के पेंशन योजना के संदर्भ में बताया कि 15 हजार से कम आय के व्यवसायी को लघु व्यापारी मानधन पेंशन योजना से पेंशन हेतु अल्प शुल्क जमाकर पेंशन दिया जाएगा, जिसमें मासिक प्रीमियम में आधा शुल्क व्यवसायी जमा करेगा और आधा शुल्क सरकार जमा करेगी। बैठक में लखन बाबा, कृष्ण मोहन केसरवानी, रामशंकर जायसवाल, संजीव आहूजा, संजय सोनी, अश्विनी केसरवानी, सतीश सोनी, सुनील जायसवाल, अभिषेक सोनी, मनीष केसरवानी, राहुल केसरवानी, अख्तर राइन, इश्तिखार अहमद, पवन केसरवानी, पवन सर्राफ, सरदार वुरलविंदर सिंह, दिनेश केसरवानी, शोभित केशरवानी, अंकित केसरवानी, एस के खदन, मुन्ना सोनी, हरीश सोनी, घनश्याम सोनी, प्रहलाद खंडेलवाल, राम चन्द्र सोनी, प्रवीण वुमार केसरवानी, नारायण जी, मनोज, अमित आदि व्यापारी मौजूद रहे।

जन्माष्टमी पर धूती में होगा विविध आयोजन

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। श्री कृष्ण जन्माष्टमी बाबा बंशीधर धाम पूरे भुलई धूती में धूमधाम से मनाया जाएगा।

कार्यक्रम के आयोजक अमित तिवारी और अनूप तिवारी ने बताया कि यह भगवान श्री कृष्ण की चौथी जन्माष्टमी महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसमें क्षेत्रीय भक्तजन जन्माष्टमी महोत्सव कार्यक्रम में भाग लेकर श्रद्धा के साथ जन्माष्टमी में नाचते गाते हैं भगवान श्री कृष्ण की महिमा बहुत ही अपरंपार है । कार्यक्रम के निवेदक राजमणि तिवारी चंद्र मणि तिवारी राकेश तिवारी तथा जितेंद्र रितेश आशीष कार्तिक दिव्य शिवांश अक्षत शाश्वत और भक्तजन लोगों का स्वागत करने के लिए अभी से ही उत्सुक दिखाई दे रहे हैं ।

अजय यादव बने समाजवादी पार्टी के जिला सचिव

पट्टी, प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव और प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल की अनुमति से तथा युवजन सभा के अध्यक्ष अरविंद गिरी की संस्तुति पर प्रतापगढ़ जनपद के पट्टी तहसील के बनपुरवा गांव के रहने वाले अजय यादव को समाजवादी युवजन सभा का जिला सचिव नामित किया गया है उनके जिला सचिव बनाए जाने पर स्थानीय लोगों ने हर्ष व्यक्त किया है।

वर्तमान सरकार सैनिकों का कर रही अपमान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश कांग्रेस सैनिक प्रकोष्ठ के निर्देश पर यहां जिला सैनिक सेल द्वारा वर्ष 1971 में बंगला देश के युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की विजय ने इतिहास रचते हुए 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों को आत्मसमर्पण कराकर दुनिया के सामने एक मिसाल कायम की थी। आज इसके 50 वर्ष पूरे होने पर विजय दिवस के रूप में मनाने का कार्यक्रम जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय इंदिरा भवन पर समारोह पूर्वक जिला अध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी की अध्यक्षता में मनाया गया।

कार्यक्रम में उ0प्र0 सैनिक कांग्रेस के उपाध्यक्ष सुभाष मिश्र, उपाध्यक्ष अक्षयवर शुक्ल, उपाध्यक्ष दीपक भट्ट व डी0एन0सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार सैनिकों का अपमान कर रही है। शहीदों को शहीद का दर्जा नहीं दे रही है। सरकार सैनिकों के आश्रितों के प्रति उदासीन है। उन्होंने कहा कि पूर्व सैनिकों को कांग्रेस से जोड़कर कांग्रेस की नीतियों को घर-घर पहुंचाना होगा। अध्यक्ष पद से बोलते हुए जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष डॉ0लालजी त्रिपाठी ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया और कांग्रेस द्वारा किये गए कार्यों को गिनाते हुए कहा कि सिर्फ कांग्रेस ही इस देश को बनाने का काम किया और आने वाले दिनों में भी कांग्रेस ही करेगी। कार्यक्रम का संचालन सैनिक कांग्रेस के जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ल ने किया।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

अधीनस्थों पर निर्भरता छोड़ें और स्वयं सक्रियता दिखाएं

सेतु निगम के एमडी और यूपी प्रोजेक्ट कारपोरेशन के एई से स्पष्टीकरण तलब

सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम संयुक्त समिति ने की विकास कार्यों की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

भदोही। उत्तर प्रदेश विधान मंडल की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम संयुक्त समिति के अध्यक्ष रामचंद्र यादव एवं सदस्यों ने विकास कार्यों की समीक्षा की। संयुक्त समिति के अध्यक्ष ने कहा कि अधिकारीगण अपनी कार्यशैली/ सोच में परिवर्तन लाएं और कार्यों को पूर्ण कराने में रुचि दिखाएं। अधीनस्थों और निर्माण एजेंसियों के भरोसे ही कोई परियोजना साकार रूप नहीं लेती। इसके लिए खुद को आगे बढकर कार्य करना होता है।

उत्तर प्रदेश विधान मंडल की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम संयुक्त समिति के अध्यक्ष रामचंद्र यादव कार्य सही ढंग से न करने पर सेतु निर्माण इकाई के एमडी को स्पष्टीकरण एवं यूपी प्रोजेक्ट कारपोरेशन लि0 के एई को स्पष्टीकरण देने का निर्देश दिया। उत्तर प्रदेश विधान मंडल की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम संयुक्त समिति के अध्यक्ष रामचंद्र यादव एवं सदस्यों ने जल निगम की समीक्षा के दौरान नाला का कार्यों एवं अमृत योजना के बारे में जानकारी ली। जल निगम के अधिकारी ने बताया कि अमृत योजना में जमीन पर विवाद बताने पर समिति के अध्यक्ष ने जिला पंचायत अध्यक्ष से विवाद को सुलह कराने का आग्रह किया। अध्यक्ष रामचंद्र यादव ने विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान विद्युत एक्सईएन को निर्देश दिया कि जर्जर लटकते तारोंध्जर्जर विद्युत पोलों को भी हटाकर नये पोल लगाए जाएं। उन्होंने सभी निर्माण एजेन्सियों को निर्देश दिया कि हर हाल में 31 दिसंबर 2021 तक कार्य को पूर्ण कराकर जनप्रतिनिधियों के द्वारा उसका लोकार्पण कराएं। उत्तर प्रदेश विधान मंडल की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम संयुक्त समिति के अध्यक्ष रामचंद्र यादव एवं सदस्यों ने जल निगम, पावर कारपोरेशन लिमिटेड, पावर ट्रान्समिशन कारपोरेशन लि0, अनुसूचित जाति वित्तीय एवं विकास निगम लि0, स्टेट कांसट्रक्शन एंड इन्फ्राट्रक्चर डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, राजकीय निर्माण निगम, राज्य सेतु निगम, प्रोजेक्ट कारपोरेशन लि0, अल्पसंख्यक वित्तीय एवं विकास निगम लि0, आवास एवं विकास परिषद, राज्य भंडारण निगम, राज्य सडक परिवहन निगम, वन निगम की योजनाओं की समीक्षा की। बैठक में सुल्तानपुर के विधायक सूर्यभान सिंह, सरेनी रायबरेली के विधायक धीरेंद्र बहादुर सिंह, कौशाम्बी से लालबहादुर, अम्बेडकर नगर से विधायक संजू देवी, जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी, विधायक भदोही रवींद्रनाथ त्रिपाठी, मुख्य विकास अधिकारी भानुप्रताप सिंह, जिला सूचना अधिकारी प्रवीण मालवीय, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी अजय कुमार सिंह, जिला उद्योग अधिकारी हरेंद्र प्रताप, जिला ग्रामोद्योग अधिकारी जवाहरलाल एवं समस्त अधिकारीगण उपस्थित रहे।

रक्षासूत्र बांधकर लिया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

अखंड भारत संदेश

भदोही। बरसात के मौसम में पौधरोपण को बढ़ावा देने और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से वन विभाग द्वारा जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है।

इसी क्रम में वन विभाग के बैनर तले रक्षा सूत्र बांधने का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। आज वन विभाग के सहयोग से ग्राम पंचायत वारी, चकसिखारी और रामजानकी मंदिर में वट वृक्ष को रक्षा सूत्र बांधकर पौधरोपण और संरक्षण का संकल्प लिया गया। वन विभाग के रेंजर आरके मिश्र ने कहा कि धरा पर जीवन को सुनिश्चित करने में पर्यावरण का भी अहम योगदान है। जिस प्रकार हम पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते हैं, उसी प्रकार हमें प्राण वायु की जरुरत पड़ती है, जो पेड़ों से मिलती है। इसी के प्रति लोगों को जागरुक किया जा रहा है।

वन रेंजर आरके मिश्र की अगुवाई में आज जगह जगह रक्षा सूत्र अभियान चलाया गया। इसी क्रम में सुंदर वन रामजानकी मंदिर स्थित वट वृक्ष को प्रधान पुजारी की उपस्थिति में रक्षासूत्र बांधकर विरासत स्वरूप वृक्षों को संरक्षित करने का संकल्प लिया गया। इसी क्रम में ग्राम वारी में स्थित डीह बाबा पर पीपल एवं नीम के संयुक्त वृक्ष को रक्षा सूत्र बांधकर वृक्षों को बचाने का संकल्प लिया गया। चकसिखारी में भी इसी तरह रक्षा सूत्र बांधा गया। इस मौके पर वन दरोगा नवनीत मिश्र, धनंजय यादव, रामानुज प्रसाद, प्रधान चकसिखारी जेपी मिश्र, प्रधान वारी विपिन सिंह, सुंदर वन मंदिर के प्रधान पुजारी आदि मौजूद रहे।

औषधीय पौधों का हुआ रोपण

अखंड भारत संदेश

भदोही। औषधीय पौधों के रोपण व वितरण के एक माह के अभियान के अंतर्गत तहसील परिसर स्थित दुर्गा मंदिर योग कक्षा पर औषधि पौधों का रोपण व वितरण किया गया। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष विनय श्रीवास्तव ने कहा कि यह औषधि पौधे हमारे जीवन के लिए कितना उपयोगी है, इसकी सार्थकता कोरोना काल में हम सब ने गिलोय, अश्वगंधा, सतावर, तुलसी, नीम आदि औषधि गुण के पौधों की उपयोगिता को समझ लिया है। अब इनका स्थान प्रत्येक घरों में होना चाहिए। इस दौरान क्षेत्राधिकारी भदोही प्रियांक जैन ने कहा कि हमारे जीवन के लिए ऑक्सीजन आवश्यक है। इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते। जो हमें इन वृक्षों से प्राप्त होते हैं। इसलिए इनका रोपण पोषण व संरक्षण आवश्यक है। राज्य प्रभारी पतंजलि योग समिति संदेश योगी ने कहा कि इन औषधि पौधों को घर-घर तक पहुंचाना हम सब का लक्ष्य है। साथ ही उन्होंने कहा कि खेती भूमि में रासायनिक खाद कीटनाशकों का प्रयोग हमें बंद करना है। इससे होने वाली हानि से हम सब परिचित हैं, इसलिए भूमिका सुपोषण व संरक्षण आवश्यक है। इस अवसर पर पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी सुरेश मौर्या, महिला पतंजलि योग प्रभारी स्नेह लता श्रीवास्तव, रामागिरी, सोहन पाल, राजन मौर्य, दीपक यादव, विनय राय, राजेंद्र प्रसाद मौर्य, कमला शंकर यादव, उमाशंकर पटेल, रोशनी दुबे, प्रियंका पांडे सहित बड़ी संख्या में योग साधक उपस्थित थे।

श्री राधा कृष्ण स्वरूप सज्जा प्रतियोगता 30 को

अखंड भारत संदेश

भदोही। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद् के प्रमुख आयाम राष्ट्रीय महिला परिषद व ओजस्विनी के तत्वाधान में श्रीकृष्ण जन्म उत्सव कार्यक्रम के अवसर पर 30 अगस्त की सुबह 11:00 बजे श्रीराधा कृष्ण स्वरूप सज्जा प्रतियोगता का कार्यक्रम भदोही नगर के भरत पैलेस चौराहे के पास श्री महादेव मंदिर के प्रांगण में मनाया जाएगा। इस आशय की सूचना देते हुए राष्ट्रीय महिला परिषद की जिलाध्यक्ष सुमन सिंह ने बताया कि इस कार्यक्रम में कृष्ण के बाल लीलाओं का बच्चों द्वारा प्रतियोगिता कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में अंर्तराष्ट्रीय हिंदू परिषद काशी प्रांत महामंत्री तरुण कुमार शुक्ला एवं अंर्तराष्ट्रीय हिंदू परिषद विभाग अध्यक्ष संतोष दुबे उपस्थित रहेंगे।

कटरा बाजार बूथ का किया गया सत्यापन

भदोही। भाजपा द्वारा इस समय बूथ सत्यापन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। शुक्रवार को पार्टी द्वारा नगर के कटरा बाजार के बूथ संख्या 305 का सत्यापन किया गया। इस दौरान नगर पालिका परिषद अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल ने बूथ सत्यापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बूथ कमेटी के अध्यक्ष को अपने बूथ को मजबूत करने की बात कही गई। वहीं पार्टी की जिला उपाध्यक्ष व बूथ सत्यापन प्रभारी संगीता खन्ना ने भाजपा द्वारा चलाए जा रहे बूथ सत्यापन कार्यक्रम के बारे में वहां पर मौजूद बूथ कमेटी के लोगों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी। साथ ही बूथ को मजबूत करने पर बल दिया। इस मौके पर पार्टी के नगर मंडल महामंत्री अजय दूबे, सभासद गिरधारी जायसवाल, बूथ अध्यक्ष सौरभ चौरसिया, किशन चौरसिया, रोहित यादव, राजू सेठ आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

शिक्षा ऐसी हो, जिससे बच्चों की समझ विकसित होः रवींद्र

परिषदीय विद्यालयों में बांटी गई निशुल्क पाठ्य पुस्तकें

प्रेरक कार्यक्रमों को ध्यान में रख आगे बढ़ें शिक्षक

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। विकास खंड ज्ञानपुर के न्याय पंचायत परशुरामपुर के कंपोजिट विद्यालय काशीरामपुर और कंपोजिट विद्यालय ज्ञानपुर देहात में खंड शिक्षा अधिकारी ज्ञानपुर रवींद्र शुक्ल के द्वारा निशुल्क पाठ्य पुस्तकों का वितरण किया। खंड शिक्षा अधिकारी ने सभी शिक्षकों से मिशन प्रेरणा के निर्धारित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ने और लक्ष्य को प्राप्त करने का आह्वान किया।

बीईओ ने कहा कि सभी शिक्षक साथी कर्तव्यों का पालन करते हुए शासन की गाइडलाइन के अनुसार गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध रहे। विद्यालय खुलने पर कोविड-19 की गाइड लाइन का अनुपालन कराया जाए। पढ़ाई-लिखाई के क्रम में पहले से निर्धारित कार्यक्रम/ पाठ्यक्रम/ माड्यूल को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करवाया जाए, ताकि बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति और जिज्ञासा का विकास हो। बीईओ ने कहा कि बच्चों को पढ़ाने में सबसे ज्यादा ध्यान इसी बात पर देना चाहिए कि बच्चे के अंदर समझ विकसित हो और वह पाठ्यक्रम को गंभीरता से लेते हुए उससे जुड़े सवाल पूछे। इसमें सफल होने पर ही बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव है। ऐसे बच्चे अन्य विकास खंडों के लिए प्रेरणा का कार्य करेंगे। पुस्तक वितरण कार्यक्रम को नोडल संकुल शिक्षक प्रतीक मालवीय ने भी संबोधित किया। न्याय पंचायत परशुरामपुर के अन्य विद्यालयों में यूपीएस उमरिया, कंपोजिट विद्यालय चकसुंदर, कंपोजिट विद्यालय सिंहपुर, कंपोजिट विद्यालय गिरधरपुर, कंपोजिट विद्यालय डुहिया, पीएस गिरधरपुर, पीएस भावसिंहपुर में एसएमसी अध्यक्ष एवं प्रधानध्यापक की उपस्थिति में पुस्तक का वितरण किया गया।

विज्ञान या चमत्कारः मोरवा नदी तीरे पूजा जा रहा यह हैंडपंप

मोरवा नदी के तट पर हो रही इस हैंडपंप की पूजा, बिना चलाए ही सबमर्शिबल पंप की तरह निकल रहा पानी

लोगों में बना कौतूहल, दूर-दूर से देखने को पहुंच रहे लोग

अखंड भारत संदेश

भदोही। यह धरा चमत्कारों और अविश्वसनीय घटनाओं से भरी पड़ी है। विश्व प्रसिद्ध कालीन नगरी भदोही क्षेत्र में मोरवा नदी के तट पर एक ऐसा भी हैंडपंप है, जिसकी इन दिनों पूजा हो रही है। लोग वहां पहुंचते हैं और हैंडपंप को प्रणाम कर प्रसाद और जल ग्रहण करते हैं। यह सिलसिला पिछले दस दिनों से अनवरत चला आ रहा है। जनपद की तहसील औराई की ग्रामसभा उधवा माफी और रामपुर के बीच पडने वाली मोरवा नदी के किनारे स्थित जोगी वीर हनुमान मंदिर व शिव मंदिर स्थित है। इसी मंदिर परिसर में एक हैंडपंप लगा है, जो पिछले दस दिनों से बिना हैंडल मारे (चलाए) अनवरत पानी दे रहा है। हैरानी की बात तो यह है कि इस हैंडपंप में सबमर्शिबल पंप जैसी कोई व्यवस्था नहीं की गई है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि इससे पहले नदी के आसपास का इलाका कई बार पानी से डूब चुका है, लेकिन इस तरह का मामला पहले कभी देखने को नहीं मिला। कुछ लोगों का मानना है कि इस बार बारिश अच्छी होने के कारण भूमिगत जल स्तर में बढ़ोतरी हुई है, यही कारण है कि इस तरह से बिना चलाएं हैंडपंप से लगातार पानी आ रहा है। वहीं कुछ लोगों का कहना है कि अगर ऐसा है तो बाकी नलों से पानी क्यों नहीं आ रहा। लोग, इसे कुदरत का करिश्मा मान रहे हैं और आस्था और विश्वास के साथ जोडकर देख रहे हैं। प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में पुरुष एवं महिलाएं इसे दैवी चमत्कार मानकर इस हैंडपंप का दर्शन करने पहुंच रहे हैं। जोगी वीर मंदिर के पुजारी त्रिलोकीनाथ ने बताया कि वे पिछले 18 सालों से उक्त मंदिर पर पुजारी के रूप में सेवा दे रहे हैं लेकिन ऐसा चमत्कार इससे पहले उन्होंने कभी नहीं देखा।

बहन मायावती को पांचवी बार मुख्यमंत्री बनाने का कार्य करे ः भीमराज

बसपा प्रदेश अध्यक्ष ने कार्यकर्ताओ में भरा उत्साह

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। बहुजन समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं की एक समीक्षा बैठक सुरियावां नगर स्थित बावन बीघा का तालाब पर संपन्न हुई। जिसमें मुख्य अतिथि बसपा के प्रदेश अध्यक्ष भीम राज भर रहे। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष को पहुंचते ही कार्यकर्ताओं ने बसपा नेता हरि शंकर दादा चौहान के नेतृत्व में माल्यार्पण कर स्वागत किया।

इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष ने कार्यकर्ताओं के उत्साह को सलाम करते हुए कहा कि आप सभी कार्यकर्ता इसी उत्साह के साथ लगे रहे, आने वाला समय बहुजन समाज पार्टी की होगी। उन्होंने कहा कि बहुजन समाज पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है जो समाज के पिछड़ों को सम्मान देने का काम करते हुए पिछड़े के बेटे को विधायक मंत्री व सांसद बना कर समाज को सम्मानित किया है। कहा कि पिछड़ी, चौहान, यादव, धीवर, कश्यप, जाट की अगर कोई हितैषी है तो वह बहुजन समाज पार्टी है। उन्होंने समय आने पर आप सभी लोग बहुजन समाज पार्टी के साथ मजबूती से लग जाए जिससे आने वाले 2022 के चुनाव में वर्तमान की भ्रष्ट सरकार को उखाड़ फेंकने के साथ एक बार फिर प्रदेश में सुशासन राज की स्थापना करने के लिए बसपा सुप्रीमो बहन कुमारी मायावती के नेतृत्व में सरकार बनाया जाए। सभी कार्यकर्ताओं का आवाहन किया अपने अपने बूथों को मजबूत करें, चुनाव आपके हाथ में है अब आप सभी दिन रात एक कर बसपा की सरकार बनाने के लिए लग जाए।

भाजपा सरकार में बढ़ा जुल्म व अत्याचारः यादव

सयुस के राष्ट्रीय महासचिव ने की पार्टी के युवा संगठनों के साथ समीक्षा बैठक

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। समाजवादी युवजन सभा के राष्ट्रीय महासचिव उदय प्रताप यादव ने शुक्रवार को कंसापुर गांव में स्थित समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय में पार्टी के युवा फ्रंटल संगठनों के साथ समीक्षा बैठक की। जहां पर उन्होंने युवाओं में जोश भरने का काम किया और भाजपा सरकार के खिलाफ आर-पार की लड़ाई लड़ने का आह्वान किया।

इस दौरान श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी का जन्म संघर्ष से तप कर हुई है। समाजवादियों ने जुल्म व अत्याचार के खिलाफ हमेशा संघर्ष किया। उन संघर्षों के बल पर हमारे बुजुर्गों ने पार्टी को प्रदेश में सत्ता दिलाई। लेकिन अब युवाओं को आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में लोगों के ऊपर जुल्म और अत्याचार बढ़ गया है। महिलाओं के साथ बलात्कार किया जा रहा है। सरकार लोकतंत्र की हत्या कर रही है। इसके लिए संघर्ष करना होगा। उस संघर्ष में पुलिस की लाठी खानी पड़े या फिर जेल जाना पड़े तो घबराए नहीं। आज का दिन हमारा नहीं है। लेकिन कल का दिन समाजवादियों का होगा। उस संघर्षों की बदौलत प्रदेश में सत्ता का परिवर्तन होगा और सूबे में सपा की सरकार बनेगी। पार्टी की सरकार बनने के बाद एक-एक कार्यकर्त्ता की हैसियत मंत्री, विधायक व जिलाध्यक्ष से कब नहीं होगी। श्री यादव ने पार्टी के युवाओं से कहा कि वह अपने बूथों को मजबूत करें। ताकि चुनाव में पार्टी प्रत्याशी को अधिक से अधिक मतों से जीताया जा सके। इस मौके पर पार्टी के निवर्तमान जिलाध्यक्ष बालविद्या विकास यादव, जिला महासचिव हृदय नारायण प्रजापति, समाजवादी यूवजन सभा के जिलाध्यक्ष बाबा बिंद, लोहिया वाहिनी के जिलाध्यक्ष अजीत यादव पप्पी, समाजवादी छात्र सभा के जिलाध्यक्ष लवकुश यादव, धीरज मिश्रा, गोरख पांडेय, अनुराग यादव आदि मौजूद रहे।

कालीन उद्योग को उजाड़ने में लगी है सरकारःजाहिद

पूर्व विधायक ने कहा रोडटेप की नई दरो से कालीन उद्योग को लगा गहरा झटका

अखंड भारत संदेश

भदोही। समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक जाहिद बेग ने शुक्रवार को विज्ञप्ति जारी कर केंद्र की भाजपा सरकार पर कालीन उद्योग को उजाड़ने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि देश का कालीन उद्योग हस्तकला है। इस उद्योग में 60 प्रतिशत मजदूर व 40 प्रतिशत कच्चे माल से कलात्मक कालीन तैयार होता है जो श्रम के बदले देश विदेशी डालर अर्जित करता है। देश का नाम भी विश्व पटल पर रौशन होता है। लेकिन सरकार कालीन उद्योग की लगातार उपेक्षा कर रही है। पूर्व विधायक ने कहा कि कालीन उद्योग वैसे ही जीएसटी ई-वे बिल व ड्रा बैक में कटौती से पिछड रहा था, कि केंद्र सरकान ने रोडटेट की नई दरे लागू कर निर्यात पर टेक्स का 5 प्रतिशत लाइसेंस के रुप में मिलने वाला संजीवनी भी समाप्त कर दिया। सरकार के गलत निति से उद्योग में छोटे व मझोले निर्यातक के समक्ष बड़ी चुनौती आ गई। आज विश्व पटल पर प्रतिष्पर्धा का दौर है। कालीन उद्योग में बुनाई से लेकर कालीनो में प्रयुक्त होने वाले कच्चा माल एक तरफ महंगाई की मार झेल रहा है। दूसरी तरफ सरकार की उपेक्षा ऐसे में प्रतिष्पर्धा के दौर में खास कर छोटे व मझोले निर्यातकों का बिखर जाना स्वाभाविक प्रतिक हो रहा है। पूर्व विधायक ने कहा कि शनिवार को एक प्रतिनिधि मंडल एसडीएम से भेट कर राष्ट्र पति संबोधित पत्रक सौपेगा। पूर्व विधायक ने यह भी कहां कि कालीन उद्योग को बर्बाद करने वाले भाजपा सरकार को जनता 2022 यूपी विधानसभा में भाजपा सरकार को सत्ता से बेदखल कर लेगी।

डेरवां पीएससी पर टीकाकरण कराने वालों की उमड़ी भीड़

अखंड भारत संदेश

भदोही। औराई क्षेत्र के डेरवां में स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर कोविड के संक्रमण से बचने के लिए इस समय काफी संख्या में लोग टीकाकरण कराने पहुंच रहे है। विभाग के तरफ से तैनात कर्मचारी और स्थानीय पुलिस की मौजूदगी में भी लोग सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नही कर रहे है और लगातार भारी भीड़ लगाकर टीकाकरण का इंतजार कर रहे है। यह नजारा केवल एक ही केन्द्र पर नही है, बल्कि सभी केन्द्रों पर भारी भीड़ देखने को मिल रही है। टीकाकरण में दो प्रकार के लोगों का टीकाकरण किया जा रहा है।

सम्पादकीय

अहम है यह आम राय

इसे भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का सबूत ही कहा जाएगा कि घरेलू राजनीति में कई मसलों पर एक-दूसरे का तीव्र विरोध कर रहे तमाम दल अफगानिस्तान के सवाल पर सरकार के सुर में सुर मिलाए नजर आए। अफगानिस्तान के विषम हालात पर केंद्र सरकार की ओर से गुरुवार को बुलाई गई सर्वदलीय बैठक अपने उद्देश्यों में सफल हुई कही जा सकती है। तालिबान के काबुल पर कब्जा करने के बाद से ही वहां से विचलित करने वाली तस्वीरें, वीडियो और खबरें आ रही हैं। ऐसे में आम लोगों के बीच ही नहीं तमाम राजनीतिक दलों के मन में भी यह सवाल उठना लाजिमी था कि आखिर हमारी सरकार इस पूरे घटनाक्रम को किस रूप में देख रही है। अफगानिस्तान के साथ न केवल हमारा सदियों पुराना रिश्ता रहा है, बल्कि वहां हाल के वर्षों में हमने बड़े पैमाने पर निवेश भी किया है। इसके अलावा वहां पैदा हुई राजनीतिक अस्थिरता आम तौर पर पूरी दुनिया और खास तौर पर दक्षिण एशिया की शांति के लिए गंभीर चुनौती साबित हो सकती है।

सर्वदलीय बैठक में सरकार ने साझा चिंता के इन तमाम बिंदुओं को संबोधित किया और जहां तक संभव था अपनी स्थिति स्पष्ट करने की कोशिश की। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने साफ कहा कि अफगानिस्तान में मौजूदा हालात अच्छे नहीं हैं, लेकिन फिलहाल भारत की पहली प्राथमिकता है वहां फंसे लोगों को सुरक्षित निकालना। तमाम मुश्किलों के बावजूद वह अपना यह अभियान जारी रखे हुए है। जहां तक अन्य पहलुओं की बात है तो भारत सरकार तमाम मित्र देशों से संपर्क में है, वहां शांति और व्यवस्था स्थापित करने के साथ ही वैकल्पिक सरकार गठन की कोशिशों पर भी बात हो रही है, लेकिन इस मामले में धैर्य और संयम बनाए रखना होगा। ऐसे मामले जल्दबाजी में तय नहीं होते। विदेश मंत्री ने यह कहने में भी कोई संकोच नहीं किया कि तालिबान दोहा में किए गए अपने वादों पर कायम नहीं रहे। वहां तय हुआ था कि काबुल में अफगान समाज के हर तबके की नुमाइंदगी वाली सरकार के जरिए धार्मिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र को सुनिश्चित किया जाएगा। फिर भी, उन्होंने यह साफ किया कि सरकार अफगानिस्तान में हरेक स्टेक होल्डर से संपर्क बनाने और संवाद प्रक्रिया शुरू करने की कोशिश कर रही है। लेकिन जहां तक रुख तय करने की बात है तो फिलहाल तो 'वेट एंड वॉच' की पॉलिसी ही सबसे उपयुक्त है। इसे भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का सबूत ही कहा जाएगा कि घरेलू राजनीति में कई मसलों पर एक-दूसरे का तीव्र विरोध कर रहे तमाम दल अफगानिस्तान के सवाल पर सरकार के सुर में सुर मिलाए नजर आए। मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने तमाम दलों की भावना को व्यक्त करते हुए कहा कि अफगानिस्तान में जो कुछ हो रहा है, वह पूरे देश की समस्या है। कहने की जरूरत नहीं कि सही मौके पर उभर आने वाली ऐसी राजनीतिक सर्वसम्मति बेहद अहम होती है। यह जहां विदेश नीति के मोर्चे पर सरकार को ताकत देती है, वहीं देश में लोकतंत्र की जड़ को मजबूत बनाती है।

अब परमाणु नहीं जल शक्ति संपन्नता की जरूरत

आशीष पांडेय

जल शक्ति या जल की शक्ति। भारत में जल से शक्ति प्राप्त करने का अपना इतिहास रहा है। वर्तमान में हम प्रत?यक्ष या अप्रत?यक्ष रुप से निश्चित ही इस शक्ति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। जल से प्राप्त शक्ति और उसकी उर्जा का विभिन्न रूपों में प्रयोग हो रहा है। यह शक्ति हमें पोषित व समृद्ध बनाने में अहम भूमिका का निर्वाह करती है। आज विश्व को प?रमाणु शक्ति से अधिक जल शक्ति की आवश्यकता है। परमाणु शक्ति यह शब्द अपने आप में ही सामरिक समग्रता को लपेटे हुए है, हालांकि इसका प्रयोग अब मानवीय सेवाओं में भी किया जाने लगा है, फिर भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि परमाणु शक्ति संपन्नता का होना देश के रक्षात्मक और सामरिक वर्चस्व का पैमाना बनता जा रहा है। आज हर देश खुद को परमाणु संपन्न बनाने की होड़ में लगा है, जो विनाश की तत्परता को इंगित करता है। इसके विपरित अगर जल शक्ति और जल संपन्नता पर विचार करें तो यह स्पष्ट तौर पर देखा जा रहा है कि इस महत्वर्पूण विषय पर गंभीरता की व्यापक कमी है। हद तो यह है कि वैश्विक स्तर पर इस महत्वपूर्ण विषय के लिए जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है, जो हमारी उदासीनता का एक और बड़ा प्रमाण है। जल के रूप में प्राप्त अमूल्य निधि लगातार हमारी पहुंच से दूर होती जा रह है। इसकी कमी पर वैश्विक चिंता व्यक्त की जाने लगी है। ऐसी वस्तु जिनकी हमें व्यापक व अवश्यंभावी रूप से आवश्यकता हो और उसकी कमी होने लगे, तब हम उसकी प्राप्ति के लिए अन्य उपायों पर विचार करने लगते हैं।

तीसरा विश्व युद्ध पानी को लेकर लड़े जाने की भविष्यवाणी कई लोग कर चुके हैं। जल संरक्षण की गंभीरता नहीं समझने वालों को अब यह जानना भी होगा और समझना भी होगा कि इस प्रकार की भविष्यवाणी लोगों ने हवा हवाई नहीं की थी। जल क्षेत्र से जो आंकड़े मिल रहे हैं वो वास्तव में चौकाने वाले हैं। विश्व के कई देशों के साथ भारत के भी अनेक क्षेत्रों में प्रतिवर्ष पीने योग्य जल के बिना मृत्यु पाने के लिए लोग अभिशप्त रहे हैं। कई ऐसे उदाहरण भी हैं कि मृत्यु के भय के कारण लोगों ने अपनी जन्मभूमि से पलायन तक कर लिया है। दुनियाभर में ऐसे लाखों उदाहरण अभी भी जीवंत हो रहे हैं। जल के बिना सामाजिक और आर्थिक ताना-बाना कैसा होगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि इस धरा और आम जन का कंठ जल से हमेशा भीगा रहे, इसके लिए हमारे पूर्वजों ने काफी कठोर परिश्रम किया। अगर हम जल स्रोतों से दूरी, उनके प्रति उदासीन होने, उन्हें प्रदूषित करने और इस जीवनदायी जल को व्यर्थ में बहाते समय जल बिन भयावह भविष्य की कल्पना कर लें तो शायद इस बर्बादी को हम रोकने में थोड़े बहुत कामयाब हो जाएं। वैश्विक स्तर पर जल संकट सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। विश्व की सभी सरकारें, सामाजिक संस्थान एवं वैश्विक संस्थान सामूहिक रूप से इस चुनौती को दूर करने के लिए प्रयासरत हैं। भारत, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका में भूजल का दोहन अगाध मात्रा में हो रहा है। अमेरिका और चीन की तुलना में लगभग भारत 1.5 गुना अधिक भूजल का प्रयोग करता है। यूनाइटेड

नेशन वर्ल्ड वाटर डेवलपमेंट की रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2050 तक दुनिया के छह अरब लोगों के पास पीने का पानी उपलब्ध नहीं होगा। इस रिपोर्ट का आशय यह है कि वर्ष 2050 तक दुनिया की आबादी 9.4 से 10.2 अरब के आसपास होगी और तब करीब छह अरब लोगों के सामने पीने के पानी की समस्या पैदा हो जाएगी।

ऐसे में समय में परमाणु संपन्नता का मनोरोग थम जाए और यह विश्व जल संपन्नता पर फिर से एक जुट होकर आगे बढ़े। कारण यह भी है कि जलवायु परिवर्तन और दुनियाभर में गहराते जल संकट के बीच विकास की नई कहानी वही देश लिखेगा, जो पानी का धनी होगा। यानी, आज जो देश जितना पानी बचाएगा, वह भविष्य में उतनी ही बड़ी शक्ति के रूप में उभरेगा। रहीम दास जी ने पानी के महत्व को 16वीं सदी में ही उकेरने का काम किया था, उन्होंने अपने दोहे में पानी की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा था कि रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून। पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून? वर्तमान परिस्थितियों पर गौर करें तो वैश्विक स्तर पर जल संरक्षण अब जिस प्रकार गंभीरता के साथ मुद्दा बना है, यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शी सोच से ही संभव हो सका है। जलशक्ति मंत्रालय का गठन इसी सोच को मूर्त रूप देने का सार्थक प्रयास रहा। मंत्रालय का दायरा बढ़ाते हुए इसमें अंतरराष्ट्रीय से लेकर अंतरराज्यीय जल विवाद, पेयजल उपलब्ध कराने, बेहद जटिल नमामी गंगे परियोजना, गंगा नदी और उसकी सहायक एवं उप सहायक नदियों को स्वच्छ करने की महत्वाकांक्षी पहल को भी शामिल किया गया। इस मंत्रालय ने जल जीवन मिशन, जल शक्ति अभियान, कैच द रेन आदि अनेक योजनाओं को धरातल पर उतारकर जल प्रबंधन और जल संरक्षण पर अप्रतिम सफलता प्राप्त की है। जल जीवन मिशन के हर घर नल से जल योजना को शुरू हुए केवल दो वर्ष हुए। अपने इस समय काल में इस योजना ने 190 देशों की जनसंख्या से अधिक संख्या में नल से जल का कनेक्शन देश के ग्रामीण अंचलों में उपलब्ध करा दिया है। अब देश के 8 करोड़ ग्रामीण परिवारों को नल से शुद्ध पेयजल निर्धारित और नियमित रूप से उपलब्ध हो गया है। स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री मोदी ने जल जीवन मिशन की घोषणा करते हुए कहा था कि वर्ष 2024 तक भारत के सभी घरों में स्वच्छ पानी उपलब्ध करा दिया जाएगा। जल शक्ति मंत्रालय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस लक्ष्य के प्रति संकल्पित होकर इसे 2022 तक पूरा करने का प्रयास शुरू कर दिया। जिसके सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त होने लगे हैं।भारत रत्न और देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई जी ने भी कहा था कि अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो वो निश्चित रूप से पानी के लिए होगा। लेकिन भारत में यह स्थिति ना हो, इसके लिए अटल जी ने देश को एक दूरदर्शी सोच दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जल क्षेत्र में लगातार हो रही गंभीर स्थितियों पर अटल जी की सोच को गढ़ने का काम किया।जल क्षेत्र की गंभीर होती जा रही स्थितियों की ना केवल समीक्षा करना शुरू कर दिया बल्कि इनके समाधान के लिए कई योजनाओं को मिशन मोड में लागू भी किया गया। जल संरक्षण को जनांदोलन बनाने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुख्य भूमिका रही है। जल क्षेत्र से जुड़े लोगों से सीधे संपर्क कर उनसे इस मुद्दे पर बातचीत करना उनकी इस पहल का मुख्य केंद्र बिंदु रहा है। जल के अलावा जल स्रोतों के संरक्षण, उनके प्रबंधन व नवनिर्माण के लिए प्रधानमंत्री की तत्परता देखी जा सकती है। भारत में जल स्रोतों के संरक्षण व विकास पर भी तेजी से काम हो रहा है। दुनिया ने यह देखा है कि भारत बदल रहा है। भारत के पास राजनीति?क इच्छाशक्ति और जनसहभागिता की बड़ी ताकत है। जिसके दम पर यह देश दुनिया को केवल जल संरक्षण ही नहीं बल्कि पर्यावरण संरक्षण सहित अन्य क्षेत्रों में भी सही और बेहतर दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आने वाली पीढ़ियों को प्राकृतिक संसाधनों से युक्त ग्रह देना सबकी प्राथमिक जिम्मेदारी है। जिसके लिए भारत की रचनात्मक भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

यूं ही दब्बू बना रहा भारत, तो चीन-पाक की गोद में बैठ जाएगा तालिबान

भारत सरकार की अफगान नीति पर हमारे सभी राजनीतिक दल और विदेश नीति के विशेषज्ञ काफी चिंतित हैं। उन्हें प्रसन्नता है कि तालिबान भारतीयों को बिल्कुल भी तंग नहीं कर रहे हैं और भारत सरकार उनकी वापसी में काफी मुस्तैदी दिखा रही है। वह जो भी कर रही है, वह तो किसी भी देश की सरकार का अनिवार्य कर्तव्य है लेकिन उसके कर्तव्य की इतिश्री यहीं नहीं हो जाती है। अफगानिस्तान में भारतीय राष्ट्रहितों की रक्षा करना उसका पहला धर्म है। इस मामले में भारत सरकार लगातार चूकती हुई दिखाई पड़ रही है। विदेश मंत्री जयशंकर ने ताजा बैठक में आज जो सफाई पेश की है, वह बिल्कुल भी संतोषजनक नहीं है। उनका कहना था कि तालिबान ने दोहा में जो समझौता किया था, उसका पालन नहीं हुआ है और भारत सरकार ने अभी तक 'बैठे रहो और देखते रहो'' (वेट एंड वाच) की नीति अपना रखी है। पता नहीं उस बैठक में आए नेताओं ने जयशंकर की इस मुद्दे पर खिंचाई की या नहीं? उन्हें जयशंकर से पूछना चाहिए था कि तालिबान और अफगान सरकार के बीच समझौता किसने करवाया था? क्या भारत सरकार ने करवाया था? वह समझौता अमेरिका ने करवाया था। समझौता लागू न होने पर अमेरिका को नाराज होना था लेकिन उसकी जगह आप नाराज हो रहे हैं? यह नाराजी फर्जी है या नहीं? अमेरिका का सर्वोच्च जासूसी अफसर विलियम बर्न्स काबुल जाकर तालिबान नेताओं से बात कर रहा है और आप यहां दुम दबाए बैठे हैं। आप तो भागे हुए राष्ट्रपति अशरफ गनी से भी ज्यादा डरपोक निकले। उसे तो अपनी जान की पड़ी हुई थी। आपको तालिबान से क्या खतरा था? क्या दोहा समझौते के बाद तालिबान ने एक भी भारत–विरोधी बयान दिया है? काबुल की आम जनता तालिबान से जितनी डरी हुई है, उससे ज्यादा आप डरे हुए हैं। आप हामिद करजई और डॉ. अब्दुल्ला जैसे भारत के परम मित्रों की मदद करने से भी डर रहे हैं। यदि आपकी यह दब्बू नीति कुछ हफ्ते और बनी रही तो निश्चय ही तालिबान को चीन और पाकिस्तान की गोद में बैठने के लिए आप मजबूर कर देंगे। जरा ध्यान दें कि कल लंदन में हुई जी-7 की बैठक में अध्यक्ष ब्रिटिश सांसद टोम टगनधाट ने क्या कहा है। उन्होंने कहा है कि इस समूह में भारत को भी जोड़ा जाना चाहिए, क्योंकि अफगान-उथल पुथल का सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव भारत-जैसे देश पर ही पड़ेगा। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि विदेश सेवा का एक अनुभवी अफसर हमारा विदेश मंत्री है और हमारे पड़ोस में हो रहे इतने गंभीर उथल-पुथल के हम मूक दर्शक बने हुए हैं।

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक

टीकाकरण में भी शिवराज सरकार ने बनाया कीर्तिमान

के एम झा

देश के वैज्ञानिक और चिकित्सा विशेषज्ञ पिछले कई दिनों से सितंबर में कोरोनावायरस की तीसरी लहर आने की आशंका व्यक्त कर रहे हैं ।उनका यह मानना है कि कोरोना की तीसरी लहर का प्रभाव अक्टूबर में अपने चरम पर होगा इसीलिए देश के जिन राज्यों को कोरोना की दूसरी लहर ने अपनी चपेट में लिया था वहां की सरकारें उसकी तीसरी लहर से सुरक्षा हेतु जहां एक ओर अपने राज्य के लोगों को मास्क और सामाजिक दूरी ऐसे ऐहतियाती उपाय बरतने के लिए प्रेरित कर रही हैं वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपने राज्य में अधिकाधिक लोगों के टीकाकरण पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित कर दिया है । टीकाकरण अभियान की सफलता के लिए कोई राज्य सरकार अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं रख रही है लेकिन कोरोना टीकाकरण हेतु अपने राज्य के लोगों को जागरूक करने और कोरोना की तीसरी आने के पहले ही टीके की दोनों डोज लगवाने हेतु उनके अंदर उत्साह जागृत करने का जो पुनीत अभियान मध्यप्रदेश की शिवराज सरकार ने प्रारंभ किया है उसने सारे देश का ध्यान आकर्षित किया है। कभी विकास का शिवराज माडल देश के दूसरे राज्यों के लिए आदर्श बन गया था और अब कोरोना काल में शिवराज सरकार के टीकाकरण महाअभियान की अद्भुत सफलता ने कोरोना प्रभावित राज्यों के बीच अपनी अलग पहचान बनाई है। निःसंदेह मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान इसके लिए साधुवाद के हकदार हैं जिन्होंने राज्य में कोरोना की तीसरी लहर को निष्प्रभावी बनाने की पुनीत भावना से राज्य में जल्द से जल्द टीकाकरण महाअभियान को अपनी मंजिल तक पहुंचाने का संकल्प लिया है । मध्यप्रदेश में टीकाकरण के प्रति लोगों में उत्साह जगाने के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने स्वयं आगे आकर मोर्चा संभाल लिया है और वे स्वयं ही राज्य में टीकाकरण अभियान की मानीटरिंग कर रहे हैं। इच्छा शक्ति के धनी मुख्यमंत्री को इस समय केवल एक ही धुन है कि राज्य में कोरोना की तीसरी लहर की दस्तक सुनाई देने के पूर्व ही राज्य की अधिकतम आबादी के टीकाकरण का काम पूरा हो जाए ताकि कोरोना की तीसरी लहर राज्य में चिंता का कारण न बन सके। इसीलिए मुख्यमंत्री टीकाकरण के प्रति लोगों में उत्साह जगाने के लिए संपूर्ण राज्य का दौरा कर रहे हैं और टीकाकरण के साथ ही मास्क और सामाजिक दूरी जैसे ऐहतियाती उपायों की उपयोगिता से लोगों को अवगत करा रहे हैं। शिवराज सिंह चौहान टीकाकरण महाअभियान के दूसरे दिन रतलाम और इंदौर में टीकाकरण केंद्रों पर वहां की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया और वहां तैनात सरकारी अमले को यह निर्देश दिए कि टीका लगवाने के लोगों की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाए।

मुख्यमंत्री ने टीकाकरण केंद्रों पर पहुंचे लोगों से बातचीत भी की और उनसे यह अनुरोध किया कि वे अधिक से अधिक लोगों को टीका लगवाने के लिए प्रेरित करें। मुख्यमंत्री ने इंदौर में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों को निर्देश दिए कि इंदौर में जिन 65 हजार लोगों को अभी तक टीके की पहली डोज भी नहीं लग पाई है उन्हें 31 अगस्त तक पहली डोज अवश्य लग जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने इंदौर में टीकाकरण की तेज रफ्तार के लिए प्रशासनिक अमले की सराहना करते हुए कहा कि इसी साल नवंबर के अंत तक सभी पात्र व्यक्तियों को टीके की दोनों डोज लगाने का जो लक्ष्य तय किया गया है उसे पूरा करने में सभी का सहयोग अपेक्षित है।इस अवसर पर शिवराज सिंह ने यह भी भरोसा दिलाया कि राज्य में टीके की आपूर्ति में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने भावुक होते हुए कहा कि जिन बच्चों ने कोरोना काल में अपने माता-पिता को खोया है सरकार उनके साथ खड़ी है। शिवराज सरकार के मंत्रियों ने भी राज्य में विभिन्न स्थानों में टीकाकरण केंद्रों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और लोगों से पूछा कि उन्हें किसी तरह की असुविधा तो महसूस नहीं हो रही है। मंत्रियों के यह पूछने पर लोगों ने टीकाकरण केंद्रों में की गई व्यवस्थाओं को संतोष जनक बताया जिससे सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता था कि सरकार ने टीकाकरण महाअभियान की सफलता सुनिश्चित करने में लोगों की सुविधाओं का भी पूरा ध्यान रखा। मुख्यमंत्री की अपील का ही यह सुपरिणाम है कि दो दिवसीय टीकाकरण महाअभियान के दूसरे चरण में पहले और दूसरे दिन जितने लोगों के टीकाकरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था उससे अधिक संख्या में लोग टीकाकरण केंद्रों पर पहुंच गए। टीका लगवाने के लिए टीकाकरण केंद्रों पर उमड़ी भीड़ इस बात की गवाही दे रही थी कि मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश की जनता से राज्य में कोरोना टीकाकरण महाअभियान के दूसरे चरण को सफल बनाने की जो मार्मिक अपील की थी उसने लोगों को अंदर तक प्रभावित किया और इस महाअभियान को आशातीत सफलता मिली। महाअभियान के दूसरे चरण में राज्य में पहले दिन लगभग 9 हजार टीकाकरण केंद्र बनाए गए थे जबकि दूसरे दिन टीकाकरण के प्रति लोगों के अपार उत्साह को देखते हुए दस हजार से अधिक टीकाकरण केंद्र बनाए गए। दो दिन चले टीकाकरण महाअभियान2.0 में राज्य में 41.8 लाख लोगों को टीके लगाए गए। पहले और दूसरे दिन जितने लोगों के टीकाकरण का लक्ष्य तय किया गया था उससे कहीं अधिक लोगों ने टीकाकरण केंद्रों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई । टीकाकरण केंद्रों पर सुबह से ही लंबी लंबी कतारें लग चुकी थीं लेकिन सभी केंद्रों पर सरकार ने टीकाकरण प्रक्रिया के सुचारू संचालन हेतु पर्याप्त व्यवस्थाएं कर रखी थीं। टीकाकरण महाअभियान 2.0 की अपार सफलता से शिवराज सरकार का प्रफुल्लित होना स्वाभाविक है परंतु मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान इसका सारा श्रेय प्रदेश की जनता को देना चाहते हैं ।उनका कहना है कि टीकाकरण के प्रति जनता की जागरूकता और अपार उत्साह की वजह से ही यह महाअभियान आशातीत सफलता अर्जित कर सका।

1857 से पहले ही बन गई थी महिला सैन्य टुकड़ी

कृष्ण प्रताप सिंह

सर्वोच्च न्यायालय ने गत वर्ष 17 फरवरी को देश की सेना में महिलाओं के किसी टुकड़ी का नेतृत्व करने पर चले आ रहे प्रतिबंध को अतार्किक व समानता के अधिकार के खिलाफ करार देकर खारिज कर दिया तो उसे 'सच्ची समानता और प्रगतिशीलता' के पक्ष में बड़ा फैसला माना गया। थोड़ा पीछे पलटकर देखें तो जानकर खुशी होती है कि अवध की नवाबी सेना में यह समानता व प्रगतिशीलता पौने दो सौ साल पहले ही विद्यमान थी और 1857 में पहला स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा तो बहुत काम आई थी। प्रसंगवश, 1847 में वाजिद अली शाह ने अवध का तख्तोताज संभाला तो सूबे की सेना का हाल बहुत बुरा था। पूर्ववर्ती नवाबों द्वारा की गई संधियों के तहत उनके राजपाट की सुरक्षा का जिम्मा गोरी सेना को हस्तांतरित हो गया था और नवाबी सेना की भूमिका अत्यधिक सीमित हो गई थी। वाजिद अली शाह ने जल्दी ही अंग्रेजों की चालाकी ताड़ ली और अपनी सेना के पुनर्गठन में लग गए। उन्होंने महिलाओं की एक टुकड़ी भी बनाई और उसको पुरुष सैनिकों जैसा ही प्रशिक्षण दिलवाया। पुरुष टुकड़ियों की ही तरह इस टुकड़ी की भी रोजाना सुबह पांच बजे परेड हुआ करती थी और बतौर जनरल वाजिद अली शाह खुद उसका निरीक्षण किया करते थे। तब इस टुकड़ी का नेतृत्व तो महिलाओं के हाथ था ही, खकानी व सुलेमानी प्लाटूनों का नेतृत्व किन्नरों को सौंपा गया था। अबीसीनिया के एक किन्नर कमांडर को कर्नल की उपाधि भी दी गई थी।

यह वह दौर था, जब अंग्रेज एक ओर तो वाजिद अली शाह की कथित विलासिता के बहाने उनके राज पर गिद्धदृष्टि गड़ाए हुए थे, दूसरी ओर उनके प्रशासनिक सुधारों में अड़ंगे लगाते रहते थे। तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड हार्डिंग ने रेजिडेंट कर्नल रिचमंड को पत्र लिखकर निर्देश दिया था कि वाजिद अली शाह अपनी पुलिस व्यवस्था में जो भी सुधार चाहें करें, लेकिन सेना के पुनर्गठन से परहेज रखें। लेकिन 'विलासी' वाजिद अली शाह ने गवर्नर जनरल की आंखों की किरकिरी बन जाने के बावजूद यह निर्देश नहीं माना। महिलाओं के साथ संगीत व नृत्य जैसी कलाओं में पारंगत कलाकारों की भी सैनिक कुशलता परखी और सेना में विभिन्न पद देकर उनका यथोचित इस्तेमाल किया। कई रिसालों और प्लाटूनों के नाम भी लीक से हटकर रखे : बांका, तिरछा, घनघोर, फौप, अख्तरी, नादिरी, लुकी। अंग्रेजों द्वारा 11 फरवरी, 1856 को वाजिद को अपदस्थ व निर्वासित किए जाने के बाद 1857 में स्वतंत्रता का पहला संग्राम शुरू होने तक उनकी महिला टुकड़ी बिखर चुकी थी। लेकिन इस टुकड़ी का उनका अनुभव उसमें बहुत काम आया। बेगम हजरतमहल ने उसे पुनर्गठित करते हुए महलों की बांदियों और हब्शी महिलाओं तक को प्रशिक्षण दिलाकर सैनिक बना दिया। कई मोर्चों पर महिला सैनिकों की टुकड़ियां पुरुष वेश में अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष में शामिल हुईं और उनमें से अनेक ने वतन की रक्षा करते हुए प्राण भी त्यागे। लखनऊ में सिकंदरबाग के मोर्चे पर ऐतिहासिक भिड़ंत में हब्शी महिलाओं की टुकड़ी बेहद जांबाजी से लड़ी। इतिहासकारों ने लिखा है कि वे जी जान लगाकर लड़ती थीं और उनसे भिड़ रहे अंग्रेज सैनिक उनके वीरगति प्राप्त करने से पहले कतई नहीं जान पाते थे कि वे महिलाएं थीं। कहा तो यह भी जाता है कि एक हब्शी महिला सैनिक सिकंदरबाग की युद्धभूमि में स्थित पीपल के एक विशाल वृक्ष पर चढ़कर छिप गई और वहीं से अंग्रेजों को मार गिराती रही। इससे अंग्रेज सेना में एकबारगी आतंक फैल गया। भेद खुला तो उसे बेरहमी से मार दिया गया।

बिहार के नेता सिर्फ जाति की ही बात करते हैं इसलिए राज्य पिछड़ा हुआ है

संतोष पाठक

1990 के बाद बिहार में एक बड़ा राजनीतिक परिवर्तन हुआ जिसे लाने वालों ने इसे सामाजिक न्याय का नाम दे दिया। यह दावा किया गया कि बिहार में सदियों से जो सामाजिक स्तर पर भेदभाव किया गया , उसे बदलने का अब सही वक्त आ गया है। देश के गौरवशाली इतिहास का प्रतीक बिहार राज्य के साथ एक दुर्भाग्य भी जुड़ता चला जा रहा है। जिस राज्य से महात्मा गांधी ने अंग्रेजों से आजादी के अपने अभियान को शुरू किया था। जिस राज्य की धरती से 70 के दशक में भ्रष्टाचार और तानाशाही के खिलाफ एक अभियान शुरू हुआ था, वही बिहार अब विकास के पायदान में सबसे पीछे रहने के लिए अभिशप्त है। बिहार की जनता ने अपने नेताओं को सर-माथे पर बैठाने से कभी गुरेज नहीं किया। बिहारी जनता ने जिस नेता को भी प्यार दिया, भरपूर दिया। जब कांग्रेस के साथ रही तो पटना से लेकर दिल्ली तक के तख्त पर बैठाने में अपना योगदान दिया। जब सामाजिक न्याय के नारे पर भरोसा कर लालू यादव को सत्ता थमाई तो पटना से लेकर दिल्ली तक लालू यादव का अलग ही जलवा हुआ करता था। लालू राज के बाद बारी आई नीतीश कुमार की और नीतीश कुमार ने भी एक दौर में न केवल समता पार्टी और जनता दल यूनाइटेड बल्कि भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय दल को भी अपनी मर्जी से चलाया। लेकिन ऐसे बिहार का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि यहां के नेता विकास की कम और जाति की बात ज्यादा करते हैं। आजादी के बाद कई दशकों तक कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों ने ही बिहार का शासन चलाया लेकिन उस समय भी कांग्रेसी नेता अपने ही सत्ताधीन मुख्यमंत्री पर जाति के आधार पर भेदभाव करने का आरोप लगाया करते थे। बिहार के राजनीतिक इतिहास में इस तरह के पत्रों के आदान-प्रदान के किस्सों की भरमार है।

1990 के बाद बिहार में एक बड़ा राजनीतिक परिवर्तन हुआ जिसे लाने वालों ने इसे सामाजिक न्याय का नाम दे दिया। यह दावा किया गया कि बिहार में सदियों से जो सामाजिक स्तर पर भेदभाव किया गया, उसे बदलने का अब सही वक्त आ गया है। 1990 में लालू यादव पहली बार जनता दल के नेता के तौर पर भारतीय जनता पार्टी के समर्थन से बिहार के मुख्यमंत्री बने थे। इसके बाद शुरू हो गया मंडल और कमंडल का दौर। इन दोनों ने देश के साथ-साथ बिहार की राजनीति को भी बुरी तरह से प्रभावित कर दिया। बिहार जातीय हिंसा और तनाव के एक ऐसे गहरे कुंए में फंस गया जिसने बिहार को बर्बाद कर दिया। प्रतिभाओं का पलायन होने लगा और फिर इस लालू राज को जंगल राज बताते हुए लालू के सबसे करीबी रह चुके नीतीश कुमार ने 1994 के बाद से ही भाजपा के सहयोग से लालू विरोध का बिगुल बजा दिया। हालांकि उन्हें कामयाब होने में 11 साल लग गए। 2005 में उन्होंने लालू और उनकी पत्नी के राज का अंत कर बिहार के मुख्यमंत्री का पद संभाला। उनके 5 साल के पहले कार्यकाल में विकास की बयार बहुत तेजी से आगे बढ़ी लेकिन बाद में यह रफ्तार थम गई और ऐसा साफ-साफ नजर आने लगा कि अब नीतीश कुमार का भी सारा ध्यान वोट बैंक को मजबूत कर चुनाव दर चुनाव जीतना भर रह गया। पिछले 16 वर्षों से नीतीश कुमार मुख्यमंत्री हैं लेकिन कभी उन्हें दलित-महादलित का कार्ड खेलना पड़ता है तो कभी पिछड़ी जातियों का राग अलापना पड़ता है। बिहार का दुर्भाग्य देखिए कि पिछले 31 सालों से सामाजिक न्याय का नारा बुलंद करने वाले लोगों का ही शासन है, जिनका लक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट था कि उन्हें विकास की दौड़ में पिछड़ चुकी जातियों को आगे लाना था। हर तरह से दलित, पिछड़े लोगों का विकास करना था लेकिन विडंबना देखिए कि 31 साल तक बिहार पर राज करने के बाद भी उन्हें देश के प्रधानमंत्री के सामने जाकर गुहार लगानी पड़ती है कि जनगणना में पिछड़ी जातियों की भी गणना करवा दीजिए ताकि उस आधार पर हम आरक्षण बढ़ाने की मांग कर भविष्य में भी अपने वोट बैंक को मजबूत कर सकें। दिलचस्प तथ्य तो यह है कि प्रधानमंत्री से मिलने वाले सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव के अलावा बिहार और देश पर दशकों तक राज कर चुके कांग्रेस नेता, वर्तमान में देश और बिहार पर राज करने वाले भाजपा नेता, जाति-धर्म की राजनीति से अपने आपको ऊपर मानने वाले लेफ्ट के सभी घटक दलों के नेताओं के साथ-साथ ओवैसी की पार्टी के विधायक भी शामिल थे। मतलब वोट बैंक के बंटवारे के इस दौर में कोई भी पिछड़ना नहीं चाहता।बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाने की मांग को लेकर नीतीश कुमार कई चुनावों में जीत हासिल कर चुके हैं। वास्तव में 2014 से पहले यह उनका ट्रंप कार्ड हुआ करता था जिसका इस्तेमाल उन्होंने कई बार किया लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि इस बार जब वो बिहार के सभी राजनीतिक दलों का सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल लेकर देश के मुखिया से मिले तो उन्होंने भी सिर्फ जाति की ही बात की। उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि उसी बिहार की विधानसभा में आज से 15 साल पहले वर्ष 2006 में बिहार को विशेष राज्य देने के मुद्दे पर चर्चा हुई थी और उसी समय इस मुद्दे पर तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से मिलने का समय भी मांगा गया था जो मिल नहीं पाया।

तीसरी लहर की वजह बनेगा केरल? फिर मिले 32 हजार से ज्यादा कोरोना केस, संडे लॉकडाउन की वापसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल में कोरोना का कहर कम होने का नाम नहीं ले रहा है। शुक्रवार को यहां पर एक बार फिर 32 हजार से ज्यादा नए कोरोना केस पाए गए। वहीं पॉजिटिविटी रेट बढ़कर 19.22 हो गया है। 20 मई को कोरोना की दूसरी लहर के पीक के बाद यह दूसरी बार है जब केरल में 24 घंटे के अंदर 30 हजार से ज्यादा कोरोना केस दर्ज किए गए हैं। इतनी तेजी से केसेज के बढ़ने के चलते प्रदेश सरकार ने एक बार फिर से संडे लॉकडाउन लगाने का फैसला किया है। गौरतलब है कि स्वतंत्रता दिवस और ओनण पर्व के चलते पिछले दो हफ्तों से संडे लॉकडाउन हटा दिया गया था। वहीं केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने राज्य में इस तरह से कोरोना मामलों के बढ़ने के लिए होम आइसोलेशन को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में लोग अपने घर के सदस्यों से संक्रमित हो रहे हैं। प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि लोग होम आइसोलेशन में कंटेनमेंट नियमों का पूरी तरह से पालन नहीं कर

रहे हैं। इसके चलते कोरोना के मामलों में इतना ज्यादा इजाफा देखने को मिल रहा है।

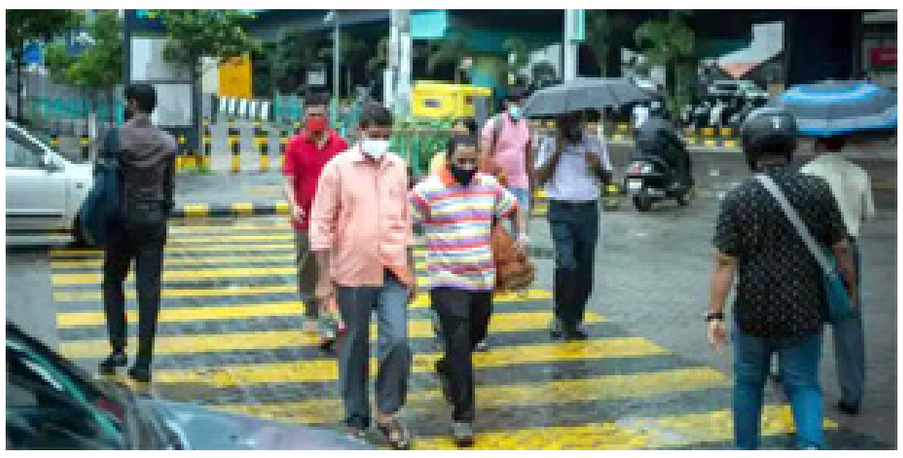

इस बीच केरल के कोविड मैनेजमेंट पर भी सवाल उठे हैं। हालांकि राज्य के मुख्यमंत्री पी. विजयन ने इसको खारिज करते हुए ऐसे आरोपों को गैरजरूरी बताया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आरोप लगाकर लोग प्रदेश की जनता की कोरोना से लड़ाई को कमजोर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार पर इस तरह के इल्जाम लगाकर लोग जनता को सरकार के खिलाफ भड़काना चाहते हैं। ऐसे हालात में लोग कोरोना के खिलाफ लड़ाई को हल्के में लेने लगेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि केरल में एक भी व्यक्ति की मौत ऑक्सीजन की कमी से नहीं हुई थी। किसी ने भी न तो स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी की शिकायत की और न ही मेडिकल इमरजेंसी में कहीं बेड की कमी हुई। केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन ने कहा कि जो लोग केरल मॉडल की आलोचना कर रहे हैं, वह नहीं जानते कि यहां पर दूसरी लहर की शुरुआत देर से हुई थी। वहीं केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने गुरुवार को केरल और महाराष्ट्र की सरकार के अधिकारियों के साथ एक मीटिंग की। उन्होंने कहा कि इन दोनों राज्यों में फिलहाल कोविड के मामले अनिश्चित तरीके से बढ़े हैं। इसके अलावा केंद्र ने ऐसे इलाकों में नाइट कर्फ्यू लगाने का सुझाव दिया जहां पर पॉजिटिविटी रेट ज्यादा है। गौरतलब है कि केरल में अन्य राज्यों की तुलना में दोबारा संक्रमण के मामले ज्यादा पाए जा रहे हैं। जुलाई के आखिरी सप्ताह से यहां पर कोरोना के मामलों में तेजी से इजाफा हो रहा है। वहीं ओणम के बाद एक बार फिर से कोरोना केसेज बढ़ने की बात कही गई थी जिसको लेकर प्रदेश सरकार ने अलर्ट जारी किया था।

कोरोना के खिलाफ जंग जारी, अब तक 61 करोड़ लोगों को दी जा चुकी वैक्सीन

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक वरिष्ठ स्वास्थ्य मंत्रालय अधिकारी ने गुरुवार को बताया कि भारत ने गुरुवार, 26 अगस्त तक कम से कम 61 करोड़ कोविड वैक्सीन दी जा चुकी है। इधर, कैडिला के टीके जायकोव डी की आपूर्ति अक्तूबर के पहले सप्ताह में शुरू होने की उम्मीद है। ये 12 साल से कम उम्र के बच्चों को दिया जा सकेगा। गुरुवार शाम 7 बजे तक, राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 611,043,573 वैक्सीन की खुराक दी गई।

जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाए जाने के खिलाफ सीपीआई नेता पहुंचे एससी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीपीआई (एम) के वरिष्ठ नेता मोहम्मद युसूफ तारिगामी ने जम्मू और कश्मीर से स्पेशल स्टेटस वापस लिये जाने के केंद्र सरकार के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। सीपीआई (एम) नेता ने शुक्रवार को सुप्रीम अदालत में अपनी एक याचिका दायर की है और केंद्र सरकार के इस फैसले को चुनौती देते हुए इसपर जल्द से जल्द सुनवाई की मांग अदालत से की है। तारिगामी ने अपनी याचिका में केंद्र सरकार के 5 अगस्त, 2019 के उन आदेशों को गैर जिम्मेदाराना बताया है जिसके तहत जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाने का आदेश दिया गया था।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने एक परिसीमन आयोग बनाया है ताकि वो राज्य में विधानसभा चुनाव से पहले राज्य की सीमा को चिन्हित कर सके। जम्मू और कश्मीर डेवलपमेंट एक्ट में जो बदलाव किया गया है उस बदलाव के तहत यह कहा गया है कि कोई भी शख्स अगर वो यहां का स्थाई निवासी नहीं भी है तो वो यहां कृषि योग्य भूमि छोड़ अन्य जमीन को खरीद सकता है। इसके अलावा जम्मू कश्मीर राज्य महिला आयोग, जम्मू कश्मीर राज्य अकाउंटब्लिटी कमिशन, जम्मू कश्मीर कनज्यूमर प्रोटेक्शन कमिशन और जम्मू कश्मीर मानवाधिकार आयोग को खत्म कर दिया गया।

याचिका कर्ता ने केंद्र सरकार के इन निर्णयों का जिक्र करते हुए कहा है कि यह सभी फैसले असंवैधानिक हैं। सीपीआई (एम) नेता ने इस मामले में अदालत से जल्द से जल्द सुनवाई करने की गुहार लगाते हुए कहा है कि अगर मामले में जल्द सुनवाई नहीं हुई तो यह याचिकाकर्ता के साथ अन्याय होगा। बता दें कि जम्मू कश्मीर में आर्टिकल 370 हटाए जाने के बाद से ही तारिगामी केंद्र सरकार पर तीखे हमले करते रहे हैं। तारिगामी ने पहले कहा था कि भारत के संविधान में हमारे लिए जो अधिकार तय किए गए थे उसे केंद्र सरकार ने छीन लिया है।

भारी पड़ सकती है अमेरिका की यह गलती, तालिबान को सौंप दी उसके 'दुश्मनों' की पूरी लिस्ट

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अफगानिस्तान को मझधार में छोड़कर जा रहे अमेरिका ने एक और बड़ी गलती कर दी है। अमेरिका ने तालिबान को उन लोगों की पूरी लिस्ट सौंप दी है, जिन्हें वह अपना दुश्मन मानता है। तालिबान के लड़ाके घर-घर जाकर इनकी तलाश में जुटे थे, लेकिन अब अमेरिका ने उनका काम आसान कर दिया है। दरअसल, काबुल में मौजूद अमेरिकी अधिकारियों ने तालिबान को उन लोगों की लिस्ट सौंप दी है, जिन्हें वह अफगानिस्तान से निकालना चाहता है। ऐसा इसलिए किया गया ताकि तालिबान उन्हें काबुल एयरपोर्ट आने से ना रोके। एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस लिस्ट में अमेरिकी नागरिकों, ग्रीन कार्ड होल्डर्स के अलावा उन अफगानियों की पहचान शामिल है, जिन्होंने पिछले 20 सालों में तालिबान के खिलाफ युद्ध में अमेरिका की मदद की है। अमेरिका के इस कदम से हजारों अफगान की जान खतरे में

पड़ गई है। तालिबान के कब्जे के बाद से ही ये लोग खौफ में हैं और जल्द से जल्द अफगानिस्तान से भाग जाना चाहते हैं। अमेरिका के इस कदम पर विशेषज्ञों ने नाराजगी जाहिर की है।

15 अगस्त को काबुल में तालिबान के कब्जे के बाद से अमेरिका ने करीब 1 लाख लोगों को अफगानिस्तान से बाहर निकाला है। इनमें से अधिकतर को तालिबान के कई चेक पोस्ट से गुजरना पड़ा है। इस प्रक्रिया को असान करने के लिए अमेरिका ने तालिबान को उन लोगों की पूरी लिस्ट सौंप दी है, जिन्हें वह निकालना चाहता है। अमेरिका के एक रक्षा अधिकारी ने नाम गोपनीय रखने की शर्त पर कहा कि वास्तव में उन्होंने तालिबान को 'किल लिस्ट' सौंप दी है। उन्होंने इसे चौंकाने वाला बताया। गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जब जो बाइडेन से इस रिपोर्ट को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि उन्हें पक्का नहीं पता है कि ऐसी कोई लिस्ट है। हालांकि उन्होंने इस बात से इनकार भी नहीं किया।

तालिबान राज को मान्यता देने के सवाल पर बोला विदेश मंत्रालय, अभी किसी की सरकार ही नहीं, जल्दबाजी न करें

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान के राज को मान्यता देने के सवाल पर भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि ऐसा सवाल करना जल्दबाजी है। हम यह बात पूछकर जल्दबाजी कर रहे हैं। फिलहाल अफगानिस्तान में किसी ने सरकार ही नहीं बनाई है। अफगानिस्तान के हालातों को लेकर मीडिया से बात करते हुए मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने यह बात कही। बागची ने कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता यह है कि अफगानिस्तान से लोगों को सुरक्षित निकाला जा सके। उन्होंने कहा, 'जमीनी हालात अभी अनिश्चित हैं। हमारी मुख्य चिंता फिलहाल लोगों की सुरक्षा और वापसी है। काबुल में अभी कौन सरकार बना रहा है, इसे लेकर कोई स्पष्टता नहीं है। ऐसे में मान्यता देने जैसी बात समय से पहले एक्शन लेने जैसी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि हमारी प्राथमिकता भारतीय नागरिकों और उन अफगानियों को सुरक्षित निकालना है, जो हमेशा हमारे साथ खड़े रहे हैं। साप्ताहिक ब्रीफिंग के दौरान बागची ने कहा कि भारत ने

अब तक 6 अलग-अलग विमानों से 550 लोगों को निकाला है। इनमें से 260 लोग भारतीय थे, जबकि अन्य अफगानी सिख, हिंदू और अन्य लोग हैं। बागची ने कहा कि हमने अमेरिका और ताजिकिस्तान जैसे देशों से भी लोगों को निकालने में मदद ली है। उन्होंने कहा कि अब तक जो जानकारी मिली है, उसके मुताबिक जो भारतीय अफगानिस्तान से निकलना चाहते थे, उन्हें वापस ले आया गया है। अब भी कुछ लोग अफगानिस्तान में हो सकते हैं, लेकिन उनके बारे में सटीक आंकड़ा नहीं है।अफगानिस्तान से लोगों को निकालने की नीति को लेकर अरिंदम बागची ने कहा कि हमने भारतीय नागरिकों के अलावा अफगानियों और कुछ अन्य देशों के लोगों को भी निकाला है। इनमें से बड़ी संख्या में हिंदू और सिख लोग भी शामिल हैं। हमारा मुख्य फोकस भारतीय नागरिकों पर है, लेकिन हम उन अफगानियों की मदद को भी तत्पर हैं, जो हमारे साथ खड़े रहे हैं। इस बीच संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायोग (ऋर्प्णें) का कहना है कि इस साल के अंत तक कुल 5 लाख अफगानी देश छोड़कर भाग सकते हैं। इसके साथ ही संस्था ने अफगानिस्तान के पड़ोसी देशों से अपील की है कि वे अपनी सीमाओं को खुला रखें और मानवीय आधार पर शरणार्थियों की मदद करें।

126 यात्रियों को ले जा रहे विमान के पायलट को हार्ट-अटैक, नागपुर में इमर्जेंसी लैंडिंग

नागपुर (एजेंसी)। 126 यात्रियों को ले जा रहे विमान के पायलट को अचानक हार्ट अटैक आ गया। बांग्लादेश के विमान की महाराष्ट्र के नागपुर में इमर्जेंसी लैंडिंग कराई गई। सभी यात्री पूरी तरह सुरक्षित हैं और पायलट को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बिमान एयरलाइंस की यह फ्लाइट मस्कट से ढाका जा रही थी। विमान जब भारत के ऊपर से गुजर रहा था तभी पायलट को हार्ट अटैक आ गया। इस दौरान विमान रायपुर के नजदीक था और इसने कोलकाता एटीसी से इमर्जेंसी लैंडिंग के लिए संपर्क किया। एक अधिकारी ने बताया कि जब विमान को आपात स्थिति में उतारने के लिए कोलकाता एटीसी से संपर्क किया गया, उस समय वह रायपुर के पास था, जिसके बाद उसे निकटतम नागपुर हवाईअड्डे पर उतरने की सलाह दी गई। विमान ने 11.40 मिनट पर नागपुर में लैंडिंग की। पायलट को तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया।

आईपीएल 2021

आंद्रे रसेल ने जड़ी सीपीएल के इतिहास के सबसे तेज फिफ्टी, पाक गेंदबाज के ओवर में बनाए 29 रन

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग(आईपीएल)2021 के दूसरे फेज के शुरू होने से पहले कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए अच्छी खबर आई। केकेआर के धाकड़ स्टार ऑलराउंडर आंद्रे रसेल ने शुक्रवार को कैरेबियन प्रीमियर लीग में इतिहास रच दिया। रसेल ने पर 255 रन बनाए। रसेल ने 50 में से 48 रन चौके-छक्के से बनाए। रसेल ने पाकिस्तानी गेंदबाज वहाब रियाज के एक ओवर में 4 छक्के जड़े। उन्होंने रहाब के 19 वें ओवर में 29 रन बनाए। वहाब ने 3 ओवर में 61 रन दिए। रसेल के अलावा केनर लुईस ने 48, वॉल्टन ने 47 रन

सेंट लूसिया किंग्स के खिलाफ मुकाबले में 14 गेंदों में फिफ्टी जड़ी। सीपीएल की ये तेज फिफ्टी है। रसेल से पहले ये रिकॉर्ड जेपी ड्यूमिनी के नाम था, जिन्होंने साल 2019 में 15 गेंदों में फिफ्टी जड़ी थी। रसेल ने 14 गेंदों में खेली गई 50 रन की नाबाद पारी में 3 चौके और 6 छक्के जड़े। रसेल की तूफानी पारी के दम पर ही जमैका की टीम ने 20 ओवर में 5 विकेट और हैदर अली ने 35 रन बनाए। जमैका टीम के कप्तान रोवमैन पॉवेल ने 26 गेंद पर 38 रन बनाए। रसेल टी-20 इतिहास के पहले खिलाड़ी बन गए हैं, जिन्होंने दो बार 14 गेंदों में 50 रनों की पारी खेली है। इससे पहले उन्होंने लंका प्रीमियर लीग 2020 में कोलंबो के लिए खेलते हुए रसेल ने 14 गेंदों में फिफ्टी ठोकी थी। आईपीएल 2021 का दूसरा फेज 19 सितंबर से यूएई में शुरू होगा।

भाविना पटेल ने रचा इतिहास, टेबल टेनिस के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय बनीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। टोक्यो पैरालिंपिक में भारत की भाविना पटेल ने टेबल टेनिस इवेंट मे इतिहास रच दिया है। भारत की टेबल टेनिस खिलाड़ी भाविना ने महिला सिंगल्स के क्लास-4 के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। उन्होंने क्वार्टर फाइनल में सर्बिया की बोरिस्लावा रांकोविच को 3-0 से हराया। उन्होंने रांकोविच को 11-5, 11-6, 11-7 से हराया। इससे पहले भाविना ने आज सुबह राउंड ऑफ 16 के मैच नंबर 20 में ब्राजील की ओलिविएरा को हराया। उन्होंने इस मुकाबले को 3-0 से जीता। भाविना ने पहला गेम 12-10 से, दूसरा गेम 13-11 से और तीसरे गेम में 11-6 से जीता। भाविना पटेल पैरालिंपिक में मेडल जीतने के करीब पहुंच गई हैं। मैच जीतने के बाद भाविना ने कहा, 'मैं पूरे देश को धन्यवाद

देना चाहती हूं, क्योंकि मैं उन्हीं की बदौलत यहां तक पहुंची हूं। आज क्वार्टर फाइनल जीत कर आई हूं, कल मेरा सेमीफाइनल है। सेमीफाइनल में पहुंचने के साथ ही भाविना ने इतिहास रच दिया है। उनसे पहले कोई भी भारतीय पैडलर टोक्यो पैरालिंपिक्स के टेबल टेनिस में क्वार्टर फाइनल नहीं पहुंचा था। भाविना ने सेमीफाइनल में पहुंचकर ये रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। क्वार्टर फाइनल से पहले भाविना ने ग्रेट ब्रिटेन की मेगान शैकलेटॉन को 3-1 से हराया था।

पॉवरलिफ्टर सकीना खातून पांचवें स्थान पर रहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की महिला पॉवरलिफ्टर सकीना खातून टोक्यो पैरालंपिक में महिलाओं के 50 किलोवर्ग में पांचवें स्थान पर रही। राष्ट्रमंडल खेल 2014 की ब्रॉन्ज मेडलिस्ट सकीना का बेस्ट अटेंप्ट 93 किग्रा रहा। चीन की डेंडान हू ने 120 किलो उठाकर गोल्ड मेडल जीता जबकि मिस्र की रेहाब अहमद ने सिल्वर और ब्रिटेन की ओलिविया ब्रूम ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। 32 साल की खातून ने पहले प्रयास में 90 किलो वजन उठाया। दूसरे प्रयास में उन्होंने 93 किलो की कोशिश की लेकिन नाकाम रही। तीसरे प्रयास में उन्होंने 93 किलो वजन उठाया। खातून राष्ट्रमंडल खेल में पदक जीतने वाली भारत की अकेली पैरालंपियन हैं। उन्होंने ग्लास्गो में 2014 में यह कारनामा किया था। उन्होंने 2018 पैरा एशियाई खेलों में भी सिल्वर जीती थी। पॉवरलिफ्टिंग में वे खिलाड़ी भाग लेते हैं जो पैरों या कूल्हे में विकार के साथ सामान्य (स्टैंडिंग) भारोत्तोलन में भाग नहीं ले सकते। इससे पहले, भारत की ही भाविनाबेन पटेल पैरालम्पिक क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाली भारत की पहली टेबल टेनिस खिलाड़ी बन गई, जिन्होंने टोक्यो खेलों में विमेंस सिंगल्स क्लास 4 इवेंट में ब्राजील की जॉयस डि ओलिवियरा को हराया। भारत की 34 वर्षीय पटेल ने अंतिम 16 मुकाबले में 12-10, 13-11, 11-6 से जीत दर्ज की।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो की मैनचेस्टर युनाइटेड में हुई वापसी, जुवेंटस को छोड़कर लौटे पुराने क्लब

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टार फुटबॉल खिलाड़ी क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने जुवेंटस को अलविदा कह दिया है। रोनाल्डो की 12 साल बाद मैनचेस्टर युनाइटेड में वापसी हो गई है। मैनचेस्टर युनाइटेड ने शुक्रवार को इसका ऐलान किया। यूनाइटेड ने एक बयान में कहा कि मैनचेस्टर यूनाइटेड को यह पुष्टि करते हुए खुशी हो रही है कि क्लब क्रिस्टियानो रोनाल्डो के स्थानांतरण के लिए जुवेंटस के साथ समझौता कर लिया है।

मैनचेस्टर युनाइटेड ने आगे कहा कि क्लब में हर कोई क्रिस्टियानो का मैनचेस्टर में वापस स्वागत करने के लिए उत्सुक है। पहले अटकलें लगाई जा रही थी कि रोनाल्डो मैनचेस्टर सिटी जा सकते हैं लेकिन उन्होंने मैनचेस्टर युनाइटेड में जाने का फैसला लिया।

शुक्रवार को जुवेंटस के कोच मासिमिलियानो एलेग्री ने कहा था कि क्रिस्टियानो रोनाल्डो का जुवेंटस में रहने का कोई इरादा नहीं है। एलेग्री ने एम्पोली के खिलाफ मुकाबले से पहले एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि रोनाल्डो ने उन्हें गुरुवार को जुवेंटस छोड़ने की अपनी इच्छा के बारे में बताया। एलेग्री ने कहा,' कल क्रिस्टियानो ने मुझसे कहा था कि वह अब जुवेंटस के लिए और नहीं खेलने की योजना बना रहे है। रोनाल्डो ने इंस्टाग्राम पर कहा,'आज मैं एक अद्भुत क्लब से विदा हो रहा हूं, जो इटली में सबसे बड़ा है और निश्चित रूप से पूरे यूरोप में सबसे बड़े क्लबों में से एक है। मैंने जुवेंटस के लिए अपना दिल और आत्मा दी और मैं अपने अंतिम दिनों तक इससे प्यार करता रहूंगा। टिफोसी बियानकोनेरी ने हमेशा मेरा सम्मान किया और मैंने हर खेल, हर मौसम, हर प्रतियोगिता में उनके लिए लड़कर उस सम्मान को धन्यवाद देने की कोशिश की।स्काई स्पोर्ट्स इटालिया ने बताया कि युनाइटेड ने जुवेंटस को 28 मिलियन यूरो की पेशकश की है। रोनाल्डो ने साल 2003 में मैनचेस्टर युनाइटेड के साथ अपने पेशेवर फुटबॉल करियर की शुरुआत की थी और वो 2009 तक इसके साथ जुड़े रहे। उन्होंने 292 गेम में 118 गोल किए हैं। उनके नाम तीन प्रीमियर लीग खिताब, एक एफए कप और दो लीग कप भी हैं। रोनाल्डो जुवेंटस से पहले स्पेन के दिग्गज क्लब रियल मेड्रिड में खेला करते थे।

Kriyayoga : Journey from Dwapar Yuga Liberated Yuga

In Kali Yuga, there was a general understanding that we have to pass through 84,00,000 (84 lakhs) types of creations before we can acquire the form of a human being.However, with the practice of Kriyayoga, we have realized that this is not true. Infact, in one lifetime, through Kriyayoga practice, we can reduce this whole process of evolution to one lifetime. Our special form of human structure is designed for uplifting of limited human-consciousness to unlimited Prophet-consciousness which brings realization of Aham Brahmasmi (I and God are one).

The same Truth is revealed in the scriptures that our existence is the presence of God. Our relation with God is like waves and ocean; we are waves and God is the ocean.This is the principle and philosophy of Kriyayoga. Therefore, our aim should be to practice Kriyayoga more and more by unceasing concentration on our self. Then, we will experience all the yugas all the time and will remain untouched by the effects of the different yugas...

By concentrating on our existence (head to toes), we automatically are directed towards concentration on the flow of breath. While practising this, be steadfast in holding the concept that everything we feel is Presence of God (Infinite Power, Knowledge, Peace and Joy..) Then, we can experience our Eternal bond with all creation and celebrate the Journey from the present Yuga to Liberated Yuga.

मानव का मुख्य आहार : परमात्मा का प्रकाश

मानव का मुख्य आहार परमात्मा का प्रकाश है जो परमात्मा के मुख से प्रकट होता है मानव स्वरूप में सिर के पिछले भाग में स्थिति मेडुला परमात्मा का मुख्य है। जहां ईश्वरीय प्रकाश कूटस्था के रूप में स्थित है और यही प्रकाश 24 तत्वों में (चित्त, अहंकार, बुद्धि, मन, 10 इंद्रियां, 5 तन मात्राएं, 5 पंचीकृत तत्व) के रूप में प्रकट होता है । सिर से पैर की उंगली तक मनुष्य का दृश्य रूप 24 तत्वों का संयुक्त रूप है। मानव का दृश्य अस्तित्व परम ब्रह्म के प्रकाश का घनीभूत रूप है। यह परम ब्रह्म की साकार उपस्थिति है, मानव का मुख्य आहार बाह्य भोजन - अन्न, फल, जल, वायु आदि ही नहीं बल्कि परमात्मा का प्रकाश है । परमात्मा के प्रकाश को शास्त्रों में परमात्मा का हुकुम, शब्द, आत्माधन, कस्तूरी, ब्रह्मनाद ओम, सूर्य, कुंडलिनी शक्ति, विवेक आदि रूपों में वर्णित किया गया है। परमात्मा का प्रकाश जिससे बाइबिल में शब्द कहा गया है ।

शब्द का मतलब आवाज नहीं है' क्रियायोग ध्यान में जो अंतर ध्वनि सुनते हैं, उसे शब्द कहते हैं। शब्द को ही बाइबिल में पवित्रआत्मा कहा गया है। जो मानव स्वरूप में सर्वव्यापी परम प्रकाश (कूटस्थ) के रूप में विद्यमान है। क्रियायोग साधना के द्वारा मेडुला में प्रवेश करने वाले दिव्य ईश्वरीय प्रकाश से संयुक्त होने पर साधक बिना वाद्य भोजन, पानी आदि के भी शरीर को पूर्ण चैतन्य शक्तियुक्त अवस्था में बनाए रखने की छमता प्राप्त कर लेता है। वह ठोस आहार के सहारे कम बल्कि सूक्ष्म ईश्वरीय प्रकाश के सहारे जीवन व्यतीत करने का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। श्री परमहंस योगानंद जी के द्वारा लिखी गई आत्मकथा योगी कथा अमृत में स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है कि संत गिरीबाला और थेरेसे न्यूमैन क्रियायोग की साधना के द्वारा बिना भोजन एवं पानी के भी शरीर को पूर्ण जीवंत चैतन्य युक्त स्वरूप में बनाए रखने में समर्थ थी।

क्रियायोग साधना के बारे में जानकारी देते क्रियायोग गुरू योगी सत्यम